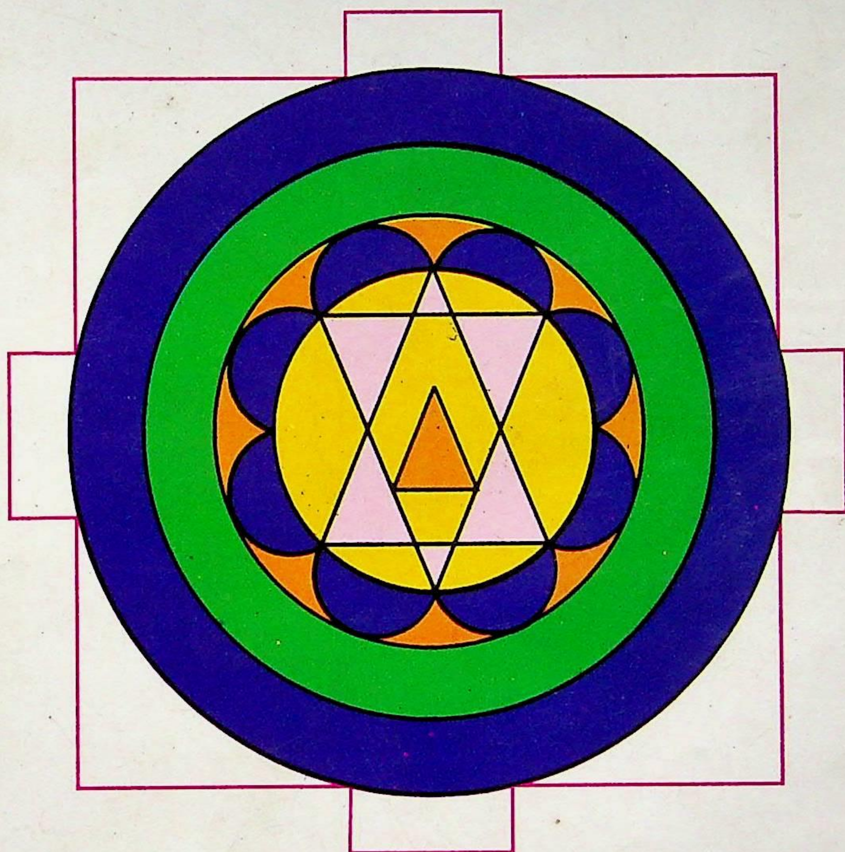
आराधना

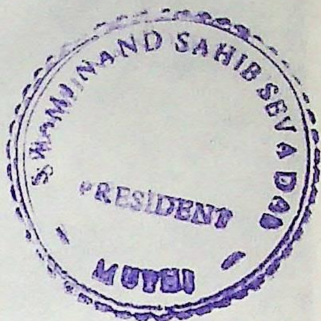
ॐ गुरुवे: नमः



ॐ क़ार शोभा समिति

जम्मू-तवी

आराधना





ॐ कार शोभा समिति

स्वामी नन्द ब़ब आश्रम

सूर्यविहार, मुट्ठी, जम्मू–तवी



पाठ क्र.	पाठ नाम	पृष्ठ संख्या
1.	गणेश अर्चना	5
2.	पाठविधि	5
3.	नवदुर्गा ध्यानम्	10
4.	गायत्री मन्त्र	12
5.	ज्योति उज्वलन विधि	13
6.	टीका और नाखिन की विधि	14
7.	नवदुर्गा प्रतिष्ठान व विधान	16
8.	नवदुर्गा व्रत	18
9.	नवदुर्गा कार्यक्रम	20
10.	जप	21
11.	कन्या पूजन	23
12.	नवदुर्गा विसर्जन	25
13.	कुशल होम	28
14.	श्री पञ्चस्तवी	28
15.	दुर्गा चालीसा	50
16.	हनुमान चालीस	53
17.	शिव चालीसा	56
18.	गणेश स्तुति	59
19.	भगवती की आरती	60
20.	भवानी लीला	61
21.	नवदुर्गा लीला	62
22.	आरती	63

पाठ क्र.	पाठ नाम	पृष्ठ संख्या
23.	नारायण आरती	64
24.	सीताराम	65
25.	गुरू लीला	65
26.	देवी लीला	66
27.	सतगुरू देवी लीला	67
28.	क्षमा प्रार्थना	68
29.	क्षमा आरती	69
30.	"शिवाय नमः ॐ नमः शिवाय"	70
31.	शंकर लीला	71
32.	श्री सतगुरू महाराज के अर्पण	72
33.	शिव लालसा	74
34.	शारिका ज्ञाल लीला	75
35.	महामन्त्र	77
36.	पाद–लीला	77
37.	शारिका ज्ञाल लीला	77
38.	गुरू लीला आराधना	78
39.	सत्गुरू आराधना	79
40.	नन्द ब़ब़ अर्पण	80
41.	माता आराधना	81
42.	रूद्राक्ष परिचय	84
43.	अंगन्यास	87
44.	मृत्युंजय मन्त्र	88

1. गणेश अर्चना

ॐ श्री गणेशाय नमः

शुक्लाम्वरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्,
प्रसन्न वदनं ध्याये सर्वविघ्नश्च पशान्तये,
अभिप्रीतार्थ सिद्धयर्थं पूजितोयः सुरैरअपि,
सर्वविघ्नच्छिदै तस्मै गणाधिपतये नमः।
युस सफेद पौशाक विष्णस छु आसवुन,
चन्द्रम रंग सफेद व्यय चतुर्भुज,
युस स्वीर अमिस प्रसन्न मौखसुन्द ध्यान,
सर्आर व्यग्न तस छि दूर सपंदान।

2. पाठविधि

साधक स्नान करके पवित्र हो आसन शुद्धि की क्रिया सम्पन्न करके शुद्ध आसन पर बैठे। पूजन सामग्री सामने रखकर पहले गणेशजी का अष्ट स्नान करे। गणेश जी की मूर्ति के बाद अष्ट स्नान जल बाकी सब मूर्तियों पर भी डाल सकते हैं।

अष्ट स्नान सामग्री : पानी, अर्ग (चावल), फूल, टीका (चन्दन का) काफूर केसर नाबद, लाय (धान की), घी, दूध, शंकर मूर्ति पर ताम्बेवाले बर्तन से दूध वाला जल न डालें। पीतल के बर्तन से दूध वाला जल डालना चाहिए। इन सब चीज़ों को मिलाकर गणेश जी का स्नान करें और पढ़ें :–

वक्रतुण्डं, एकदन्तं, कृष्णपिंघलम् कर्पिदनम्
लम्बोदरम विकटम् विघ्नराजेन्द्रं धूम्रवर्णं
भालचन्द्रँ विनायकम् गणपतियम् मन्त्रनायकं
गुलं गां गणपतिम् नमः ॐ गुलं गां गणपतयम
नमः ॐ
गुरू ब्रह्मा गुरू विष्णु गुरू साक्षात महेश्वरः,
गुरू देव ज़गत सर्व तस्मै श्री गुरूवेः नमः।

सर्व मंगल मंगल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके,
शरण्ये त्र्यम्बके गौरी नारायणी नमोस्तुते।
ॐ भूं भुवः स्वः तत सवितुर वरेण्यं
भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्
महाबले महोत्साये महाभय विनाशिनी त्राहि मां देवि दुष्प्रेक्षये शत्रुनां भयविधर्नि
माया कुण्डलिनी क्रिया मधुमीती काली कला
मालिनी मातंगी विज़या जया भगवती दीवी
शिवा शाम्भवी शक्ति शंकर वलभा त्रिनयना
वाग्वादिनी भैरवी ह्रींकारी त्रिपुरा परामपर भयी माता कुमारी तस्यै
कर्पूर गौरं करुनावतारं संसार सारं भुजगेन्द्रहारम
सदा बसन्तं हृदयारविन्दै भवं भवानी सहितं नमामी
ॐ ह्रीं धूम् नीलकण्ठ सहित दुर्गायै नमः ॐ
ॐ ह्री श्रीं क्लीं दिम् क्लीं स्वाहः
त्रिपौर सुन्द्ररें नमः ॐ
ॐ हरीं ह्रीं दक्षिणाये कालिका भगवतेः स्वाहः
दुर्गा दुर्गे दक्षिणे स्वाहः
प्रथमं शैलपुत्रे नमः द्वितियं ब्रह्मचारिणे नमः
तृतियं चन्द्रघण्टे नमः कूष्माण्डी चतुर्थम् नमः
पंचम् स्कन्दमाते नमः षष्टं कात्यायनी नमः
सप्तमम् कालरात्रि नमः महागौरी च अष्टम् नमः
सिद्धिधात्री नवदुर्गा भगवते नमः
गायत्री भगवते नमः सावित्री भगवते नमः
सरस्वती भगवते नमः अष्टादशभुज़ा श्री श्रारिका भगवते नमः शारिका श्याम सुन्दरे नमः
ॐ नमः धर्म निधानायै नमः, सुकृतिने साक्षिणे नमः प्रत्यक्ष देवायै नमः भास्करायै नमो नमः

ॐ तत सत पुरूषाये धीमहि महादेवायै धियो यो
नः प्रयोदयात धियो यो नः रूद्रायै प्रचोदयात स्वाहः
यदि रूद्राक्ष गले में हो उस पर भी यह मन्त्र पढ़कर पानी डालें।
ॐ तत् सत शिवाये नमः
श्री राम जय राम जय जय राम, श्री राम सीता राम् जय राम
जय राम जय जय राम्।
काली दाय कालिका खपर खंडर खंजर हाथ चुन चुन मारे बैर रखत तो के दिन रहे जो तो सेहत कालिका दर्शन देवें राम गुरू की शक्ति मेरी भक्ति हे लो मन्त्री गुरू का शब्द सच्चा, वीर भू वीर माता च वीर सू वीर नन्दिनि जय श्री जय दिक्षाच जय दा जय वरदेनी देवी पुत्रम् श्री वटकेश्वर नाथ भैखाये नमः जय जय हनुमान गौसाईं कृपा करो गुरू देव की नाईं ॐ नमो भगवते वासुदेवाय नमः ॐ श्री राधा कृष्णाये नमः ॐ नमो भगवते वासुदेवाय नमः कृष्णं वन्दे जगतगुरू ॐ नमो भगवते वासुदेवाय पार्वती सहित शंकराये नमः ॐ नमो भगवते वासुदेवाय लक्ष्मी सहित नारयणाये नमः ॐ नमो भगवते वासुदेवाय सरस्वती सहित ब्रह्माय नमः ॐ नमो भगवते वासुदेवाय सीता सहित राम नमो नमः ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॐ ह्रीं धूम नीलकण्ठ सहित दुर्गाये नमः ॐ नमो भगवते वासुदेवाय नमः ॐ ही धूम दुर्गाये नमः ॐ नमो भगवते वासुदेवाय नमः ॐ ह्रीं क्लीं चामुण्डाये विच्चे नमः
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय नमः
अष्ट स्नानं परिकल्पणाये नमः
सूर्य (प्रातः) उदय होने के समय तीन बार पढ़ें :—
विष्णु नारायण गोविन्द माधव मुकुन्द दामोदर मधुसूदन परमानन्द गोपीनाथ वासुदेव पद्यमनाथ
जल में मत्स्य भगवान
पहाड़ किले में राम

घने जंगलों में नरसिंह भगवान
वदे मार्ग में दत्तात्रेय भगवान
राह चलते वक्त यज्ञ भगवान
पूजा के वक्त नारद भगवान
बोलते वक्त सन्त कुमार
याचना के वक्त वामन भगवान
बुरी राह चलते वक्त कलंकी भगवान
शरीर की रक्षा हेतु धनोतर भगवान
शंख चक्र गदा पदम क्रेट कुण्डल कस्तूमन वैजयन्तीमाला पीताम्बर

इन्द्राक्षी मन्त्र दस बार पढ़ें :—

ॐ अस्यश्री इन्द्राक्षी स्तोत्रमन्त्रस्य पुरंदर ऋषिः अनुष्टप छन्दः इन्द्राक्षी देवता, ही बीजम् श्री शक्तिं कली कीलकम् सकलकामना सिद्धयर्थे पाठे विनियोगः

अथ ध्यानम्

इन्द्राक्षी द्विभुजां देवी पीत वस्त्रधरां शुभाम वामे हस्ते वज्रधरां दक्षिणे चामय प्रदाम् सहस्त्र नेत्रां सूर्याभां नानालंकार भूषिताम् प्रसन्नवदनां नित्यम् अप्सरो गणसेविताम् श्री दुर्गा सौम्य वदनां पाशांकुशधरां परां त्रैलोक्य मोहिनी देवी भवानी प्रणमाम्यहंम।

ॐ ही श्री इन्द्राक्षी श्री प्री स्वाहः

इन्द्रउवाचः— इन्द्राक्षी नाम सा दीवी दीवता समुदाहृता गौरी शाकंभरी दीवी दुर्गा नाम्नीती विश्रुता कात्यायनी महादेवी चन्द्र घण्टा महातपः गायत्री सा च सावित्री ब्रह्माणी ब्रह्मावदिनी, नारायणी भद्रकाली रूद्राणी कृष्णपिंघला अग्निज्वाला रौद्रमुखी कालरात्री रत्तपस्विनी, मेद्य शयामा सहस्त्राक्षी विष्णु माया जलोदरी महोदरी मुक्त केशी द्योररूपा महाबला, आनन्दा भद्रजा नंदा रोगहंत्री शिवप्रिया, शिवदूती कराली च प्रत्यक्षा परमेश्वरी,

इन्द्राणी चन्द्ररूपा च इन्द्र शक्ति परायणा, महिषासुर संहर्त्री चामुण्डा गर्भदेवता। वाराही नारसिंही च भीमा भैरव नादिनी श्रुतिः स्मृति द्युति मेधा विद्या लक्ष्मीः सरस्वती, आनंदा विजया पूर्णा मानस्तोकऽपराजिता, भवानी पार्वती दुर्गा हैमवत्यंविका शिवा। शिवा भवानी रूद्राणी शंकरार्ध शरीरिणी।

ॐ नमो भगवती वासुदेवाय नमः (दस बार पढ़ें)

सर्व मगंल मगल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके शरण्ये त्र्यम्बके गौरी नारायणि नमोस्तुते। (दस बार पढ़ें)

महाबले महोत्साये महाभय विनाशिनी त्राहिमाम् देवदुष्प्रेक्ष्ये शत्रुनां भयवर्धिनी (दस बार पढ़िये)

गायत्री मन्त्र :– (इक्कीस बार पढ़िये) **ॐ भू भुवः स्वः तत सवितुर वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहिधियो यो नः प्रयोदयात्।**

कर्पूर गौरं करूणावतारं संसार सारं भुजगेन्द्र हारम्

सदा बसन्तं हृदयारविन्दे भवं भवानी, सहितं नमामि (2 बार पढ़िये)

गणेश स्तुती (114 बार पढ़िये)

पुष्प अर्पन्

हर एक देवता को फूल लगाते समय पढ़ें :–

पुष्पं नमः (जबकि उससे पहले उस देवता का नाम लें)

आसन विधि

स्नान करने के बाद मूर्ति को आसन पर बिठायें :–

आसनं नमः

अब आसन लगाकर आसन पर चिकोटी लगाकर बैठें।

प्रेम से आसन मन्त्र पढ़ें :–

प्रथमं गुरूदेव गणपतिम

ब्रह्मा विष्णु आदि महेश

आधि मन्त्र शेष नाम तुम्हारा

आप तारे गुरू दात्ता तारे
ज्ञान खडकले काल सम्हार रहे
जब डाके तब डंका चलाये
खेचरी भ्रूचरी आकर खाये
बाज बाज खेचरी भ्रूचरी आ पहुँचे
गुरू तत् पवन के पुत्र मारे
काल रहे अब न द्रवत
इतने में गुरू कुण्डली जब सम्पूर्ण सेहत
सुने अन्तकूट सतों में बैठ
श्री शम्भु जी जते गुरू गौरखनाथ जी ने कहे

अब प्रेम से हाथ जोड़ कर पढ़ें :–

शक्ति दो मां, शक्ति दो माँ, शक्ति शक्ति दो मुझको करूँ तुम्हारा ध्यान पाठ निर्गुण हो तेरा मेरा हो कल्याण

मूर्ति को आसन पर बिठाने के बाद पढ़िये :–

ह्रदय सिंहासन पर आओ बैठो मेरी माँ, सुनो विनती मम दीन की जगत जननी वरदायिनी,

नवदुर्गा का ध्यान करें :–

3. नवदुर्गा ध्यानम्

ॐ दुर्गा निम्याम् त्रिनैनाम् दलित क्रीटाम शंख भुजम्
शंख शखं टिक शूल चापान्, सन्त जरने च दद्रतिनाम
महिषासन सथाम, दुर्गा निवारि कलपीठ गताम् भजे अहम
भोगे हना गदल विरक्त रसार सार विन्दु, नव हशपी
टंगता भवानि भू दुर्वादला गृहस दर्शह विमर्शह
आवाहन दुर्गा बजे नै त्रैनाम विलस त्रिय बीजम्।

जप मन्त्र :– ॐ ह्रीं धूम नीलकण्ठ सहित दुर्गायै नमः ॐ
(10900000 एक करोड़ नौ लाख)
ॐ ह्रीं धूम दुर्गायै नमः ॐ (900000 नौ लाख)

गायत्री छन्दः– हरीम् शुभ गाय विदवाय काम मालनीयाय धीमहे तनो दुर्गा प्रचोदयात् (सब तरफ 'लव' दे दे)

तरपनः– ॐ अस्य श्री नवदुर्गा मन्त्रे महिषासुर अनुष्टप छन्दाः श्री दुर्गा देवता धूम भजम हरीम् शक्ति ॐ कीलकम् दर्शार्थ हरीम काम कुक्षाशार्थे जपे विनियोगाः

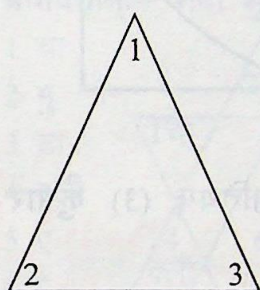
हराम् अंगुष्ठाम्याम् नमः हरीम तरजनीभ्याम् नमः ह्रीं मध्यमाभ्याम् नम्: ही अनामिकाम्यां नमः

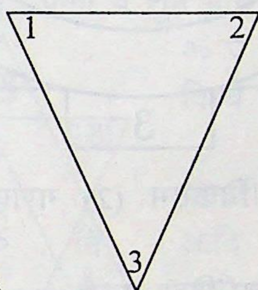
हेराम् कनिष्ठाकाभ्याम् नमः हरः करतलपृष्ठाभ्यां नमः

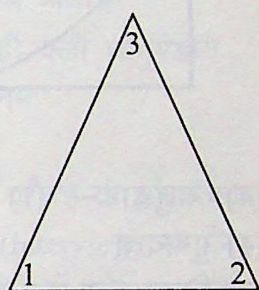
हृदाय नमः शिरसे स्वाहः शखाय वोपट कवचाय हों

नेत्रेयभ्याम् वौषट् अस्त्राय फट

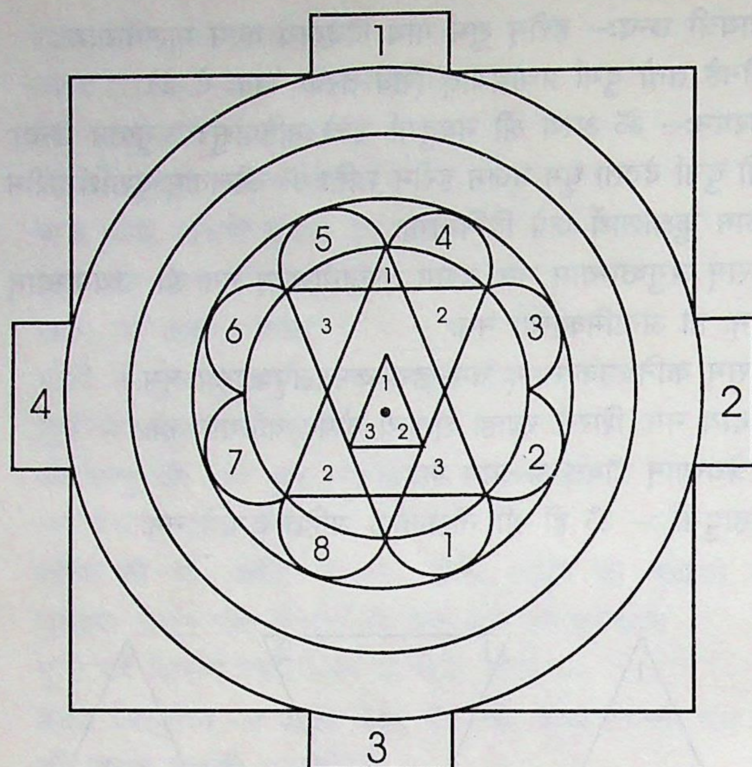
महादुर्गा :– ॐ ह्रीं श्रीं नीलकण्ठ सहित दुर्गाये नमः







(1) शैलपुत्री	(1) कूष्माण्डी	(1) कालरात्रि
(2) ब्रह्मचारिणी	(2) स्कन्दमाते	(2) महागौरी
(3) चन्द्रघण्टा	(3) कात्यायनि	(3) सिद्धिद्यात्री



(4) चर्तुद्वारः– (1) विकटम (2) गणपतियम् (3) कुमार (4) पुष्पदन्त

(3) त्रिवृतः– म-प-प-ब्रह्म विष्णु महेश

(8) अष्टद्वार–अष्टभैरवः– (1) अष्टटंग भैरवायै (2) सम्हार भैरवायै (3) भीष्म भैरवायै (4) कपिल भैरवायै (5) अनुमत भैरवायै (6) क्रोधेश्वर भैरवायै (7) चण्ड भैरवायै (8) रो रूख भैरवायै

4. गायत्री मन्त्र

ॐ भूं भुवः स्वः तत सवितुर वरेण्यं
भर्गो देवस्य धीमहि, धियो यो नः प्रचोदयात्

अर्थः– ॐ मैं उस शक्ति का चिन्तन करता हूँ जो शक्ति ॐ ब्रह्मरूप है, हे परमेश्वर आप की

भूं भुवः स्वः जो शक्ति तीनों लोकों में व्याप्त है जो प्राणों का आधार है, दुख को मिटाने वाले, सुख का रूप, दुःख मिटाने वाले सुख देने वाले

तत सवितुर वरेण्यं उस सारे जगत को पैदा करने वाले, रक्षा करने वाले और पूजा करने के लायक

भर्गो:– शुद्ध स्वरूप यानी साफ व पाक सूरत वाले

देवस्य:– (सब के प्रकाश) कुदरती ताकतों को और ताकत देने वाले

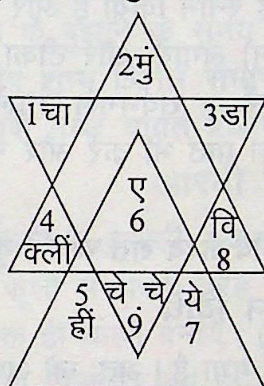
धीमहि:– हम आप का ध्यान करते हैं।

धियो:– बुद्धि को

यो न::– जो आप हमारी

प्रचोदयात्:– सदा शुभ कर्मों व शुभ मार्ग में लगायें

1 चा
2 मुं
3 डा
4 क्लीं
5 ए
6 पे
7 वि
8 च
9 हीं



नवकोण यन्त्र

ॐ ऐं हीं क्लीं चामुण्डाये विच्चे नमः

बीमारी वगैरह या साक्षात्कार आदि (Interview) के लिए पानी पीने से कोई तकलीफ नहीं

5. ज्योति उज्वलन विधि

एक सुन्दर और शुद्ध दीपक लें। नवरात्रि के पहले दिन और पहली पूजा के पहले दिया लें। इसमें थोड़ा पानी डालें। यह दीपक (ज्योत) 9 दिन बराबर बिना बुझे जलती रहनी चाहिए। इस में सोत (बत्ती) बना कर ही रखें। तेल अथवा घी डालें और जलायें, जलाने पर इस दीपक में 9 दिन जो भी नैवेद्य बांटना हो इसमें थोड़ा थोड़ा डालें (जैसे 9 इलाइची, एक सुपारी 11 दाने

काली मिर्च, 11 लौंग, 5 दाने नावद, 9 टुकड़े दालचीनी, 9 टिकिया कफूर, थोड़ी धान लाय, थोड़ा केसर और फिर तेल और दक्षिणा) और पढ़ें :– **सुन्दर द्वीप तेल या घी भरा करूँ आज तैयार ज्ञान उजाला मा करो मिटाओ मोह अन्धकार, चन्दन सूर्ज की रोशनी चमके चमन अखंड सबमें दया का पात्र ज्वाला का प्रचण्ड, ज्वाला जगत जननी मेरी रक्षा करो हमेशा, दूर करो माँ अम्बिके मेरे सब कलेश, श्रद्धा और विश्वास से तेरी ज्योत जलाऊँ तेरा ही आसरा है तेरा ही गुण गाऊँ**

यह दिया आप देवी के बाँईं तरफ उसी ऊँचाई पर रखें जितनी ऊँचाई पर देवी प्रतिष्ठित की हों।

6. टीका और नाखिन की विधि

अब सब देवताओं को जिन्हें स्नान किया है और पुष्प अर्पण किये हैं उन्हें अब मौली (नाखिन) लगायें, और टीका करें। अब मौली गले में डालें और पाठ करें :– **सर्वमंगल मंगले....** टीका करते समय माया कुण्डलिनी का पाठ भी करें और नीचे बताये गये तरीके से पढ़ें :–

माया कुण्डलिनी .... त्वं ज़ीवं शरद शतं रक्षाणो वृह्मणसपीत

जीवदान विधि

अब जीवदान का समय आ गया है। अतः जो अष्टस्नान के बाद बाल्टी में पानी बचा है उसी पानी में दर्भ डाल कर एक एक दर्भ का तिनका उठा कर सब मूर्तियों या ठाकुर और दीपक व दिए के भी सामने रखें और पढ़ें :–

जीवदानं – ॐ भूः भुवः स्वः तत् स वितुर वरेण्यं
भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रयोदयात्

और जो भगवती हो उस का नाम लेकर ये दर्भ उसके सामने डालें और इस पानी का छिड़काव सब अंगों पर करें। अब जो बर्तन इस दिन में काम लाते हों उन पर भी इस दर्भ से

छिड़काव करें और उस दिन की देवी का नाम पढ़ते हुए छिड़काव करें, यह ज़ीवदान नवदुर्गा भगवती के नौ दिन रोज़ करें अलबत्ता बाकी दिन सिर्फ उस दिन की देवी का नाम लेकर जल का छिड़काव करें, अब पीवत्र हाथ में लगायें और अपने आप को तिलक करें।

रत्नद्वीप व सन्ध्या चौंन्ग

रत्नद्वीप व सन्ध्या चौंन्ग बनाते व जलाते हुए पढ़ें :–

शुभं भवानी कल्याणं आरोग्यं सुख सम्पदाँ
सर्व शत्रु विनाशाय द्वीप ज्योति नमोस्तुते

सन्ध्या चौंन्ग की बत्ती रोज़ बदलनी चाहिए और यह रूई के दो टुकड़ों से बनानी चाहिए। सर्दियों में सन्ध्या चौंन्ग 5.45 बजे शाम के करीब और गर्मियों में 7.15 के करीब जलाना चाहिए। सन्ध्या चौंन्ग के बुझाने के समय पढ़ें :–

क्षमा मम द्वीपं शम्भु त्रिनेत्रं समाप्ते
तावद शिवपुरी गच्छ यावत प्रजापति पुनः

आरती विधि

जिस थाली में आरती सजाई हो उस थाली में भी टीका लगायें और फूलों से अच्छी तरह सजायें, 9 बत्ती बना कर इकट्ठे मिला कर एक ही थाली बनायें। (अगर मुश्किल हो तो 5 और 4 की दो बत्तियाँ मिलायें) अब धूप दीप जलायें और खड़े होकर तीन बार देवी की चरणों की आरती उतारें, तीन बार नाभि की आरती उतारें, तीन तीन बार हर भुजा की आरती उतारें और अन्त में उसके मुख कमल के सामने आरती लें और पढ़ें :–

गणपतिम् नमः शारिका भगवते नमः और अपनी
इष्टदेवी नमः घर देवताये नमः इष्ट भैरवाये नमः
आनन्देश्वर भैरवाये नमः मंगलेश्वर भैरवाये नमः
तुष्कराज़ भैरवाये नमः मंगलेश्वर भैरवाये नमः
वेताल भैरवाये नमः अग्निराज़ भैरवाये नमः

आकाश भैरवाये नमः पृथ्वी माताये नमः सरस्वती
नमः ज्वाला भगवती नमः दुर्गा भगवती नमः
गंगा माताये नमः गायत्री भगवती नमः सावित्री
भगवती नमः सरस्वती भगवती नमः यमराज़ाये नमः
धर्मराज़ाये नमः धर्माये नमः अधर्माये नमः
नमो धर्मनिधानाये नमः सुकृतने साक्षिणे नमः
प्रत्यक्ष देवायै नमः भास्कराये नमः सरस्वती नमः
पार्वती नमः शीला भगवते नमः ज़्येष्टा भगवती
नमः क्षीर भवानी नमः माता कालिका भगवते नमः
सीता देवी नमः राधा देवी नमः ब्रह्मा नमः विष्णु
नमः महेशाये नमः राज्ञिन्या भगवते नमः
कर्पूर गौरं ....
शुक्लं वरदरं ....
अपने गुरू का पाठ ....
धूपं द्वीपं कोपूरं परिकल्पयामि नमः
पढ़ते हुए चारों तरफ दिखायें

7. नवदुर्गा प्रतिष्ठान व विधान

1. नवदुर्गा बीजना :– सामग्री :– बर्तन, मिट्टी, लाल कपड़ा, फूल आदि।

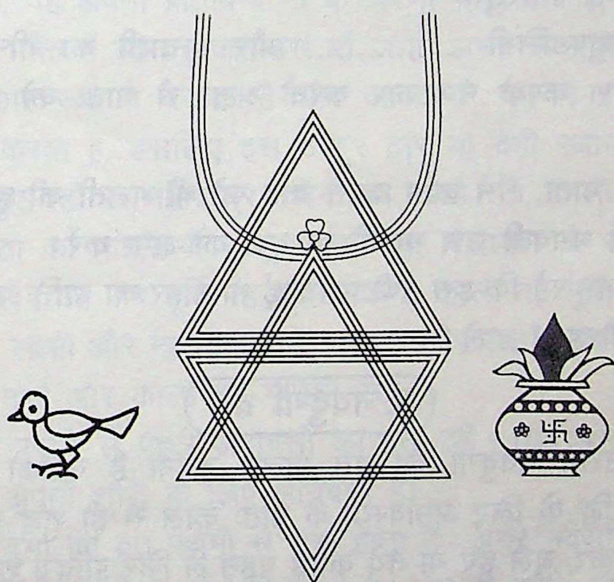
जिस बर्तन में नवदुर्गा लगानी हो अथवा जौ बीजनी हो वह बर्तन मिट्टी, तांबा, कांस या एल्मोनियम का होना चाहिए। (स्टील या लोहा या लोहा मिक्स निषेध है) जो मिट्टी इस में डालनी हो वह पवित्र स्थान की होनी चाहिए। इसके लिए जगह पहले ही तय होनी चाहिए और जिस घर में कोई मूर्ति या ठाकुर प्रतिष्छित हो और जिस कमरे में नवदुर्गा रखनी हो तो यह रखने का स्थान इस मूर्ति या ठाकुर देव के दाईं तरफ रखें और मूर्ति या ठाकुर से ऊँचा रखें। (अगर नवदुर्गा दूसरे कमरे में लगानी हो तो ज़रूरी नहीं कि मूर्ति या ठाकुर को भी उस कमरे में ले जायें)

और वह कमरा साफ-सुथरा व पवित्र हो।

जिस बर्तन में जौ लगानी हो उसको स्वच्छ करके पूरे बर्तन को अन्दर और बाहर लाल कपड़े से ढक लें और फिर आसन के रूप में फूल डालें। फिर पवित्र स्थान की मिट्टी से भर दें। (इस बर्तन के नीचे सुराख होना ज़रूरी है)। फिर दूध और पानी अपनी श्रद्धा के मुताबिक डालें और उसके ऊपर फिर साफ-सुथरा चुना हुआ जौ (वुश्क) के दाने बीज़ दें और बीजने के समय अपनी आँखें बन्द रखें और देवी के विराट स्वरूप का ध्यान करके अपने गुरू महाराज का ध्यान करके और नाम लेकर पहला बीज डालें। फिर थोड़ा रूक रूक कर श्रद्धा और प्रेम से 9 देवियों का बीज मन्त्र पढ़ कर इसमें डालते रहें। अन्त में अपनी इष्ट देवी और परिवार का ध्यान करके इस में बीज डालें।

(देवी को स्नान करते समय केवल व्रतधारी ही सामने आयें, जो व्रत न रखता हो उस के सामने स्नान न दें।)

जहाँ पर नवदुर्गा प्रतिष्ठित करनी हो उस जगह की व्याख्या।



(कलश का नक्शा हेरथ व अन्य शुभ कार्यों के लिए)

चूने या चावल के आटे से कलश का चित्र बनायें, उस पर सबसे पहले कलश का घड़ा रखें, जिसमें थोड़ा सा पानी और 9 चीज़ों का नैवेद, एक जटादारी, एक झंडी, कलश का कपड़ा, कलश को पूरी तरह से ढकें और उसके मुंह पर ॐ का टीका सिन्दूर से बनायें और देवी के नवकोण यन्त्र बनायें। जटादारी को ब्रह्म गांठ लगा हुआ नारीवन बाँधें और वह कलश के घड़े के ऊपर रखें और इसके पीछे जो भी साख दी हो उसका बर्तन सजा के पीछे रखें और ऊपर से बिल्कुल ढक कर रखें और रखते समय इन मन्त्रों का उच्चारण करते रहें :–

ॐ शैलपुत्री नमः, ॐ ब्रह्मचारिणी नमः, ॐ चन्द्रघण्टे नमः, ॐ कूष्माण्डे नमः, ॐ स्कन्दमाते नमः, ॐ कात्यायिनि नमः, ॐ कालरात्रि नमः, ॐ महागौरीय नमः, ॐ सिद्धिदात्री नमः, ॐ नवदुर्गे नमः

सर्व मगंल मगंले शिवे सर्वार्थ साधिके, शरण्ये त्र्यम्बके गौरी नारायणी नमोस्तुते

माया कुण्डलिनी .... और इन्द्राक्षी का तीन बार उच्चारण करके नमस्कार करके श्रद्धा से माता को विनती करें :

हे माता, मैंने काम करते वक्त जो भी गलती की हो, वह नवदुर्गा भगवती उस गलती या भूल को क्षमा करें।

ध्यान रहे कि इस देवी पर कोई भी बाहर का व्यक्ति फूल या अर्ग वगैरह न डाले।

8. नवदुर्गा व्रत

जिसने नवदुर्गा का व्रत पालन करना है उसको पहले आत्मशुद्धि के लिए अमावस्या के प्रातः काल से ही शुद्ध मन से नहा-धोकर, धुले हुए या नये कपड़े पहन ले फिर इन्द्रिय शुद्धि के लिए पंचगव्य बनाये :– पंचगव्य बनाने के लिए गायका दूध, घी,

शहद, शक्कर और दही मिलाये और दर्भ को विष्टूर बना कर हिलायें और 11 बार गायत्री मन्त्र पढ़ें, फिर इस पंचगव्य की आचमन करें।

जो मनुष्य अपने जीवन का उद्धार करना चाहता है उसको वैसे ही कर्म करने होते हैं कि वह खुद ही नारायण का रूप बन सकता है लेकिन यह कठिन क्रिया इस संसार में कुछ जीव ही करने के योग्य होते हैं। जिस प्राणी को अपनी इन्द्रियों पर काबू हो जाता है और फिर अपने मन में ज्ञान का प्रकाश हासिल करता है वह जीवन फिर सभी दुःखों से मुक्त हो जाता है और इस महाशक्ति नवरात्रः का सच्चा भक्त बन जाता है।

दृष्टान्तः– जिस तरह एक सुन्दरी अपने आप को सिंगार करते समय सामने आईने में अपना अंग–अंग देखकर खुद को निहारती हुई पुलकित और रोमांचित हो उठती है उसी तरह देवी भक्त माँ का ध्यान करते हुए पुलकित हो जाता है, वह रोमाँच से भर उठता है, वह अपना प्रतिबिम्ब माँ के चरणों में देखता है, और वह पूरी भक्ति में लीन होकर उस माँ जगत अम्मा के प्रतिबिम्ब को साकार रूप से देखता है और वह अपने मन में इसका आभास करता है, इसलिए इस ठाकुर द्वार या देवी स्थान को सजाते हुए वहाँ पर महिषासुर मर्दिनी का फोटो रखें, काली और दुर्गा माता का फोटो भी रखें, सजाते हुए नारायण के सामने लक्ष्मी रखें। यह सब मूर्ति रहस्य नीलकण्ठ काली की मूर्ति खुद के दायें, लक्ष्मी और नारायण बायें, गणपत और लक्ष्मी, सरस्वती, बीच में दुर्गा और काली की मूर्तियाँ रखें।

व्रत रखने से पहले अमावसी का व्रत रखें। (यह अमावसी का व्रत अपनी शुद्धि के लिए अनिवार्य है)

नवदुर्गा का व्रत प्रथमी से शुरू होता है। अगर नवरात्रि या महानवमी के दिनों में कोई दिन बढ़े या कम हो जाये, तो कम होने में पूरे नवदिन का व्रत रखना चाहिए और बढ़ने की सूरत

में जितने दिन बढ़ें तो व्रत रखना चाहिए लेकिन घटने में 9 दिन से कम का व्रत नहीं हो सकते हैं।

अपनी शुद्धि के लिए पहले दिन से ही रोज़ कपड़े बदलें। जो भी पहनने हों साफ सुथरे और धुले हुए पहनने चाहिएं। याद रहे इन दिनों में काला कपड़ा बिल्कुल निषेध है।

देवी का आसन लाल चमकीला दिलकश और लुभावना होना चाहिए।

इन दिनों में चावल खाना निषध है।

अपने शरीर की अवस्था देखकर एक समय किसी रोटी सब्ज़ी या आलू आदि से भोजन करें जिसे फलाहार भी कहते हैं करना ज़रूरी है।

इन दिनों दशमी, एकादशी व द्वादशी के तरीके के व्रत नहीं होते हैं। क्योंकि किस देवी को दशमी मानें और किसको एकादशी या द्वादशी इसलिए एक ही तरह का फलाहार पूरे 9 दिन करना ज्यादा सम्भव हैं।

9. नवदुर्गा कार्यक्रम

नवदुर्गा के दिनों में हर एक काम नियमानुसार होना चाहिए

रात 12 बजे से 2 बजे तक	– निद्रा
रात 2 बजे से 4 बजे तक	– जप
प्रातः 4 बजे से 5 बजे तक	– नहाना, वस्त्र बदलना, देवी का स्नान, ठाकुर द्वार की सफाई, दीपक की बत्ती वगैरह लगाना, आरती का थाल सजाना
प्रातः 5 बजे	– आवाहन शुरू कर लें
प्रातः 6 बजे	– पञ्चस्तवी पाठ
प्रातः 7.30 बजे	– आरती

प्रातः 9 बजे	– प्रसाद
प्रातः 10 बजे से 12 बजे	– जप या यज्ञ
दोपहर 12 बजे से 1 बजे तक	– प्रसाद
दोपहर 1 बजे से 4 बजे सायं तक	– पाठ (कोई भी जैसे रामायण, दुर्गा सप्तशती श्रीमद्भगवतगीता आदि)
सायं 4 बजे से 5 बजे तक	– फिर खुद का स्नान
सायं 5 बजे से 6 बजे तक	– सफाई, प्रसाद आदि
सायं 6 बजे से	– सन्ध्या आरती
सायं 7 बजे से 8 बजे तक	– पञ्चस्तवी
सायं 8.30 बजे तक	– समाप्ती

पूरे 9 दिन ऐसा ही कार्यक्रम बनायें

आरतीः– नियमानुसार और निश्चित समय पर प्रातः और सन्ध्या काल करें।

10. जप

हर एक देवी का जप दुर्गा सप्तशती पढ़ कर ही करें। दुर्गा सप्तशती में 13 अध्याय हैं। इन्हें नौ दिनों में बांटें जैसे 1, 2, 1, 2, 2, 2, 1, 1, 1 और हर एक दिन अपना अध्याय पढ़ें। जप के लिए बीज मन्त्र का प्रयोग करें और साथ में अपने अपने दिन की देवी का जप मिलायें जैसे :–

ॐ ऐं क्ली सौं शैलपुत्रे नमः
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं ब्रह्मचारिणे नमः
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चन्द्रघण्टे नमः
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कूष्माण्डे नमः
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं स्कन्दमाते नमः
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कात्यायनी नमः
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कालरात्रि नमः

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं महागौरी नमः

ॐ ऐं ह्रीं सिद्धिद्यात्री नवदुर्गा भगवती नमः

और अपने 2 दिन कम से कम 15000/- और सिद्धि के लिए 1 लाख करें और हर एक 1000 में 10 आहुति देनी होती है। (यह आहुति जो रोज़ अग्नि जलाते हैं हर रोज़ देनी होती है और जो अन्त में नवमी के दिन यज्ञ करते हैं उस दिन यह आहुती इकट्ठे देनी होती है – जिसे मन्त्र यज्ञ कहते हैं। (जप और आहुती दोनों गुप्त होनी चाहिए यानी स्वर बाहर नहीं आना चाहिए – केवल स्वाहः शब्द ही ऊँचे स्वर में होना चाहिए।

जो भी चीज़ अपने लिए तैयार करनी हो (यहाँ यह ज़रूरी है कि व्रत वाला नियमानुसार ही खाये बार–बार न खाये), उसका भोग पहले देवी मां के चरणों में चढ़ाना चाहिए और चढ़ाते वक्त जिस देवी का दिन हो उस देवी को निम्न ढंग से समर्पित करना चाहिए :–

चैत्र/अश्विन मास से शुक्लपक्षस्ये प्रतिपदाँ/.........

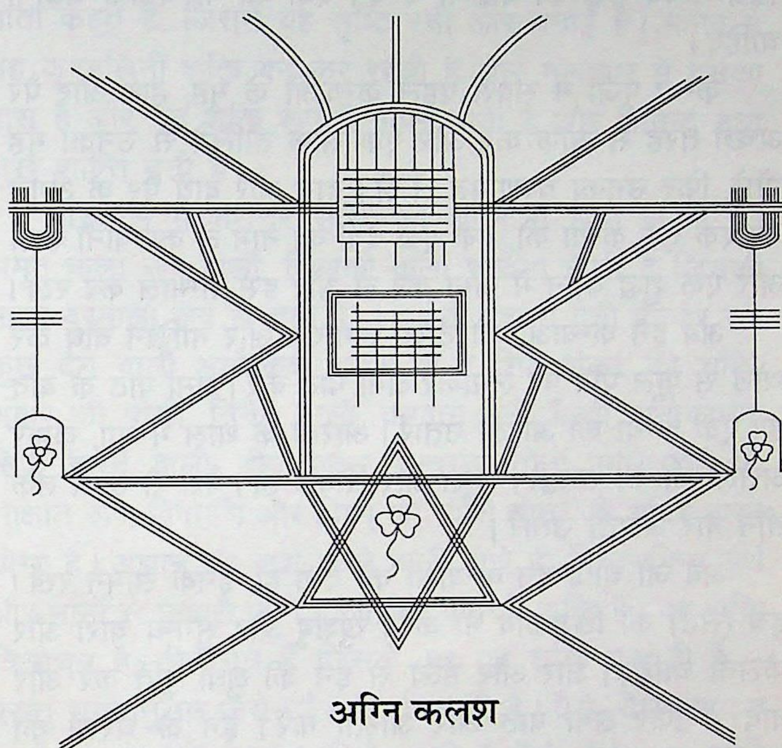
अमुक वारः स्नानयतां प्रथम्/अमुक शैलपुत्रे/अमुक नैवेद्य प्रतिग्रह्यामि नमः

फिर परमेश्वरी का **क्षमा पाठ** करें, उसके बाद पहले व्रतधारी को प्रसाद दें जो भी भोग चढ़ाना हो उसे **ज्योत** के पास भी लें।

कलश या मूर्ति के सामने दो छोटे बर्तन ताँबे या काँसे या एल्मोनियम या घर की सनिवारी दो, शंख घण्टा रामायण, राम मूर्ति, हनुमान, गणपति, चरणपादुका खडाऊँ टीके का बर्तन, चन्दन और सिन्दूर (अलग) सिन्दूर चन्दन और केसर इकट्ठे मिलाकर देवी का टीका लगता है। चन्दन बिल्कुल खाली और अलग शिवजी को लगाना चाहिए। खालिस चन्दन का टीका देवी पर न लगायें। और न सिन्दूर का टीका शिवजी पर लगायें।

भोग से थोड़ा सनिवारी में डाला करें। एक दिन छोड़ के

एक दिन नमक क़ा परहेज करें और एक दिन छोड़ के एक दिन केवल मिष्ठान (मीठा) ही खायें।


अग्नि कलश

11. कन्या पूजन

यज्ञ करने वालों को अष्टमी के ही दिन कन्या पूजन करना चाहिए। कन्यायें 8 वर्ष से कम आयु की होनी चाहिए। कन्यायें कम से कम 5 और अधिक से अधिक 9 होनी चाहिए।

यथाशक्ति ब्रह्मा, विष्णु और महेश को भी पूज सकते हैं और यह बालक भी 8 वर्ष से कम आयु के होने चाहिए।

कन्या पूजन के दिन सब से पहले देवी के वस्त्र, अटहोर साड़ी, चोला, बाला और हार बदलने चाहिए, कपड़े का रंग लाला ही होना चाहिए। कन्याओं को यथाशक्ति सवा रुपये से 125/- रुपये तक की दक्षिणा दे दें। देवी को भी चढ़ावा चढ़ाना चाहिए।

कन्या पूजा में सबसे पहले कन्याओं के मुंह, हाथ और पैर अच्छी तरह से साफ करें और एक साफ तौलिये से उनका मुंह पोंछे, फिर उनका चरणामृत ले लें। दायें और बायें पैर के अंगूठे पर एक एक कन्या को, एक एक देवी का नाम ले कर पानी डालें और एक शुद्ध बर्तन में जमा कर लें और इसे सम्भाल कर रखें।

अब इन कन्याओं को टीका लगाकर और नाखिन बाँध कर थोड़े से फूल पाँव पर लगाकर क्षमा पाठ करें। क्षमा पाठ के बाद हर एक कन्या की आरती उतारें। आरती के थाल में धूप, कफूर असली घी का रत्नद्वीप, फूल और सिक्के हों। पैरों से ऊपर तक तीन बार आरती उतारें।

अब जो चीज़ इन कन्याओं को देनी हो, इनके सामने रखें। इत्र (सैट) को छिड़काव भी करें। खुशबू और सुगन्ध चारों और फैलनी चाहिए। क्षीर और हल्वे से इन की क्षुधा पूर्ति करें और बाद में फिर क्षमा पाठ और आरती करें। इन के चरणों का अलग–अलग स्पर्श करें।

जो हवन न करता हो उसको कन्या पूजन नवमी को ही करना चाहिए।

इसका बचा हुआ खाना ही वह प्रसाद के तौर पर नवमी को खा सकते हैं।

अष्टमी को कन्या पूजन करने वालों ने जो कन्या पूजन का चरणामृत सम्भाल के रखा है वह अमृत के तौर पर कन्या पूजन

करने वाला, फिर व्रतधारी और बाकी सब पी लें। नवमी वाले जो कन्या पूजन करें वह इस पानी से आचमन लें।

12. नवदुर्गा विसर्जन

माया चराचर सृष्टि को रचने वाली है। इसी को नवदुर्गा माता कहते हैं, जिसने यह सृष्टि रची और बनाई है। मानव में यह कुण्डलिनी शक्ति बन कर रहती है और मूलाधार में इसका वास है और यह शक्ति रूप में ऊपर आती है और आनन्द तथा सुख शान्ति देती है।

परिकाल में चराचर सृष्टि को अपने में लीन करती है। अमृत कला रूप वाली, जिसकी कला चन्द्रमा जैसी है जिसकी माला वरमाला रूप में होती है, यह देवी ईश्वरी देवी बनकर सब कुछ देने वाली अलौकिक चमक वाली शिव शंकर की शक्ति, शंकर की प्यारी, त्रिनेत्र वाली, वाग्वाग धनी भैरवी, मनोकामना सिद्ध करने वाली, बीज अक्षर मन्त्ररूप तीनों अवस्थाओं की साक्षात रूप, विषमणि और विष्णु की प्यारी माता जो आदर करने योग्य है। अज्ञान का नाश करने वाली, ऐसे ही भिन्न–भिन्न अर्थ और नामों से पुकारी जाने वाली, वह एक ही शक्ति है। वह शक्ति त्रिलोचन है, तीन नेत्र हैं जिसके, पर वह शक्ति एक ही है – परन्तु समयानुसार जैसे–जैसे कार्य करती है। वैसे–वैसे समय व कार्य अनुसार नाम स्मरण किये जाती हैं वैसे–वैसे नाम पड़ते हैं – यही है नवदुर्गा, यही है 9 रूप।

जिस बर्तन में नवदुर्गा बीजी है, उस का थोड़ा सा हिस्सा बीच वाला, दायां और बायां और 4 कोनों वाला एक पवित्र कपड़े में लपेट कर अपने घर में रखें ताकि अगली नवरात्रा में यह मिट्टी मिलाकर उस मिट्टी को ताकत और शक्ति दे। और इसे पवित्र स्थान पर शुद्धि से अपने ठाकुर के पास रख दें (छः महीनों में कोई परहेज नहीं है) हर रोज़ की पूजा के समय इसको धूप

दिखायें।

अब सामूहिक तौर से **मंगल गान करें जैसे सर्वमंगल मंगल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके शरण्ये त्रयम्बके गौरी नारायणी नमोस्तुते।**

निकट या दूर जलवाले स्थान में विसर्जन करें। आमतौर से नित्य व्रतधारी ही विसर्जन करें लेकिन किन्हीं मुश्किलों में वह किसी भी दूसरे प्रतिनिधि को अपनी जगह से घाट तक देवी को पहुँचाने की अनुमति दे सकता है। लेकिन वह जल प्रवाह नहीं कर सकता है।

जल प्रवाह मुख्य व्रतधारी ही कर सकता है और अपने दृष्टिकोण के अनुसार जो भी उसके सगे-सम्बन्धी साथ आए हुए होंगे उनमें यह प्रतिनिधि थोड़ा-थोड़ा सबों में बाँट कर जल प्रवाह कर सकता है लेकिन इसमें प्रधान की अनुमति अनिवार्य है।

विसर्जन की विधि :– जिस समय नवदुर्गा भगवती को अपने स्थान से उठाना हो तो पहले आरती करें और क्षमा पाठ भी करें देवी स्तुती और गुरू स्तुती भी करें। तिथि और वार देखें (अर्थात शुभ मुहूर्त हो) जिन्होंने विसर्जन की रीति बनाई हो उन्हें मुहूर्त देखने की आवश्यकता नहीं है) और मांगना है :–

हे देवी, मुझे मोक्ष की आकांक्षा नहीं है गृहस्थ और संसारी ऐश्वर्य भी मुझे नहीं चाहिए। माँ, मुझे धन-दौलत की भी लालसा नहीं है, माँ मैं आपका दास हूँ इसलिए मुझे आवागमन या धन दौलत की कोई ज़रूरत नहीं, मुझे केवल जय मृडानी, जय भवानी जय दुर्गे करते-करते ज़िन्दगी गुज़ारने का आशीर्वाद दें और अन्त समय पर भी मेरे होंठों पर आप का नाम हो और हृदय में आप का ध्यान हो। मुझे ऐसा ज्ञान दो ताकि मैं जीवन का अन्त समय आप के चरणों में गुज़ार दूँ, मुझ पर कृपा करो मैं व्याकुल हूँ, परेशान व लाचार हूँ, मैं विचार पूजा अर्चना

देवगान ही नहीं कर पाता हूँ मुझे माँ सहारा दो जो कृपा देवताओं और संतजनों पर की है मुझे वैसा ही ज्ञान दो ताकि मैं आप की चरण सेवा करता रहूँ।

जय माता की ..... जय माता की ..... सारे

बोलो जय माता की का नाम लेकर देवी को उठायें **(राम नवमी में सीताराम और महानवमी में जय माता की)**

घाट पर जब सब ने या प्रधान ने यह मिट्टी हाथ में ली हो तो श्रद्धा से विनती करें :–

हे माता, यहाँ तक लाने में बुद्धि की कमी या अगर किसी प्राणी के कारण खराब चाल चलन, बुद्धि भ्रष्ट या विधि रहित या सच्चा झूठा, सौभाग्य से आपकी दया से शान्ति प्राप्ति होती है, इसलिए मैं लाचार भक्त जो शक्ति देवताओं और बड़े-बड़े देवताओं व महायोद्धाओं को प्राप्त करती है वही श्रद्धा भक्ति और शक्ति मुझ पापी को भी और जो मेरे साथ आए हुए हैं उनकी भी श्रद्धा भक्ति मुक्ति और मनोकामना पूरी करो।

ॐ ह्रीं धूम नीलकण्ठ सहित दुर्गाये स्वाहः

करके जल में प्रवाहित करें

अब अपने साथ थोड़ा सा जल किसी बर्तन में लायें और घर के तमाम कमरों बर्तनों और ठाकुर पर छिड़काव करें और फिर प्रसाद बाँटें – यह प्रसाद उसी नारियल का है जो कलश पर रखा था। इसी को तोड़ कर सब में बाँटें – यही असली देवी का प्रसाद है – मनोकामना सिद्धि – दुःखों को दूर – गृहस्थ में ऐश्वर्य लाता है, जो कलश के घड़े में पानी है उससे सभी व्रतधारी स्नान करें।

नोट :– विसर्जन सदा कुशल होम अर्थात तहर बनाने के बाद ही करना चाहिए।

13. कुशल होम

कुशल होम की तहर उन सब के भाग की होनी चाहिए जिन्होंने इन नौ दिनों में इसकी पूजा-अर्चना या सेवा या व्रत में भाग लिया हो और जिन्होंने यज्ञ में पूर्ण आहुति डालते समय अपना प्रेम दर्शाया हो। इसमें यथाशक्ति तहर बनानी चाहिए। तहर वैष्णव ही होनी चाहिए। आलू, नदरू, न्यूट्री, मटर आदि की सब्ज़ी बनाई जा सकती है। जोकि मिर्च वाली तीखी लाल रंग की होनी चाहिए और ऊपर वाली सब्ज़ी भी इसके साथ मिला सकते हैं।

तहर कर भोग इष्टदेवी, भगवती दुर्गा, जहाँ हवन किया हो, वहाँ, अग्नि में सब भैरवों की आहुति देनी चाहिए, चट्टू रखें, जल देवता, और राज़ भैरव का भोग अलग–अलग रखें। एक ही बर्तन में रखें या अलग–अलग बर्तनों में या पातल या टाकू प्रयोग करें हो सके तो मांस का प्रयोग न करें क्योंकि इन नौ दिनों में देवी को हमने साधारण भोजन से ही भोग लगाया और उसका वाहन जो कि शेर बब्बर है हमने अपनी यथा शक्ति और मन्त्रों से घास खाने पर ही तैयार किया फिर अब मांस का क्या काम।

जो जीव अपनी इन्द्रियों को वश में करता है और भक्ति का ज्ञान हासिल करके अपने जीवन का उद्धार कर सकता है तो वह बहुत ही ज्ञानी और साधक बनता है और इस जाल रूपी संसार से एक शेर की भांति पिंजरे से बाहर आता है फिर वहाँ मांस का क्या काम।

14. श्री पञ्चस्तवी

यमि कठिनि संसार कि जिसि मञ्ज़ हयुर
पनने बल किञि छि नीरिथ ह्वकान
पुरुषार्थ पननि यत्न सूत्य
यिथ पअठय सूह पञ्जर मन्ज़ छुय नेरान

जो जीव अपनी इन्द्रियों को बस में करता है और भक्ति का ज्ञान हासिल करके अपने जीवन का उद्धार कर सकता है तो वह बहुत ही ज्ञानी और साधक बनता है और जाल रूपी संसार से एक शेर की भाँति अपने पिंजरे से बाहर आता है।

पननि पुरूषार्थ ज़ोर किनि
जीवति छुय पानय नारायण बनान
पुरूषन मन्ज़ आसान काँह पोरूष
युस पुरूषोतम् भावस प्यठ छु वातान्

जो मनुष्य अपने जीवन का उद्धार करना चाहता है उसे वैसे ही कर्म करने होते हैं और वह स्वयं ही नारायण का रूप बन सकता है। लेकिन इस कठिन संसार में कुछ ही जीव ऐसा करने के योग्य होते हैं।

आपदा रूपी युस अन्त रोस्त जंगुल
फोलिमति शकलि युस बोज़न इयवान
पुरूषार्थ कि लेत्रि सूत्य़ चटि चटि
यि आपदा जंगल पतः छुना खसान

जिस प्राणी को अपनी इन्द्रियों पर काबू हो जाता है और अपने मन में ज्ञान का प्रकाश हासिल करता है वह जीव फिर सभी दुःखों व उपद्रवों से मुक्त रहता है और महाशक्ति का सच्चा भक्त बन जाता है।

ॐ नमों त्रिपौर सौन्दर्य लद्यु स्तवः

ॐ

(1) **ही दीवी युस परि चोन बीज़ अक्षर योद कुनुय**
दोष रोस्त या दोष सोस या उल्ट स्योद या व्योन व्योनुय
यमि यमि कामनायि बापत युस मनुष्य आसि ज़पान
तस मनुषस भव सरस मन्ज़ सअरि मतलब छि नेरान

हे देवी आप के ही बीज अक्षर **'ह्रीं क्लीं सौ'** का जो भक्त

विनती सहित या विनती रहित कुटिलता वगैर किसी विकार के ज्यों का त्यों रूप में अलग–अलग कर्मों में या उलटे कर्म से आपके इन बीज अक्षर मन्त्रों का चिन्तन या जप जिस-जिस कामना से करता है उसकी वह-वह कामना उसी क्षण पूरी होती है।

(2) कॉह राज़ मामूली कुलस मन्ज़ आसि ज़ामुत
कुल पृथ्वी प्यठ करान आसि राज़ आसि प्रोवमुत
तस चक्र वर्तस पादन दीवता छि पूज़ानी
छु महिमा तस चानि पाद्य पूज़ाय हुन्ज़ मेहरबानी

क्षत्रियों के साये में खानदान अथवा घराने में शूद्र वैश्य राजा पैदा हुआ था और वह सारी पृथ्वी का राजा बना। यहाँ तक कि विद्वान और ज्ञानी भी उन्हें पूजते थे। हे देवी, उसका यह उद्धार आपके चरणों की पूजा से हुआ था।

(3) माया चूय कुण्डलिनी चूय क्रिया मधुमती चूय
काली चूय कला चूय मालिनी मातंगी चुय
विजया चुय ज़या चुय इख्तियार वाजेन चुय
चित स्वरूपा चुय सामर्थ चुय शाम्भवी शक्ति चुय
शंकर सुन्ज़ ट्राठ छख चुय सरस्वती भैरवी चुय
ह्रीम शुक्लि परऽपर त्रिपौर माता इम रूप चुय

माया चराचर सृष्टि को बनाने वाली कुण्डलिनी मूलाधार में वास है जिसका सौ रूप (स्वरूप) शक्तिवाली, दया, कृपा, शक्ति मधुमती, आनन्द शक्ति काल प्रलय काल में धराचर शक्ति अपने में लीन करती है, कला चन्द्रमा की अमृतकला, रूपवाली माला व वरमाला रूप मातंगी सप्तऋषि की कन्या विजया और जया, सर्वसृष्टि रूपवाली भगवती, ईश्वर वाली देवी सब कुछ देने वाली अलौकिक चमक वाली शम्भु की शक्ति, शंकर की प्यारी त्रिनेत्रों वाली वाग्वाग्धनी व सरस्वती सरस्वती, रूप भैरवी, भैरव शक्ति "ह्री कारी" ह्री बीज मन्त्ररूपी त्रिपौर – तीनों अवस्था की साक्षात

रूप परापरमयी विषय मति अथवा विष्णु रूप माया जो आदर करने के योग्य है कौमारी अज्ञान नाश करने वाली ऐसी ही भिन्न–भिन्न शक्तियाँ हैं। अनेक नामों से तुमको पुकारा जाता है।

चर्चास्तव

–: ॐ नमः त्रिपौर सौन्दर्य :–

(4) पाद च्यान्य सौन्दर आनन्ददायक इन्द्राज़न त्रऽव यथ मोक्तमाल
यमि सूत्य ज़ीर दिच़थ महिषासुरस्य क्षण मात्रस मन्ज़ वोत सु पाताल
सुय रोज़ि पाद चोन रूज़ितन म्ये हृदयस
युथ व अम्बिकायि बोज़ श्रोणि श्रोणि ताल
सुय मनोहर पाद चोन बनितन म्ये हेतु
जय जय कारूक म्ये हावितन कमाल

ईश्वरी से शुद्ध भक्त इन्द्रियों से अर्पण की हुई हर माला जो महिषासुर के सिर पर रखा हुआ, सुन्दर पादों के झुकाव से भक्तों के मन को मोहित करने वाली जगतअम्बा का चरणकमल मेरी विजय के लिए हो।

(5) च्याज्य तुता करनस प्यठ छुन सामर्थ
बृहस्पत त दीवता ज़ड बनानी
ही त्रेन तापन गालवज्य छुस मूर्ख ब़ आसिथ
कति सामर्थ ब़ कर स्तुता च्याज्यी

हे माता, आपकी पूजा करने के लिए उदार योग में तीन नेत्र बुद्धि वाली बृहस्पत वगैरह भी मूर्ख हो जाते हैं। इसलिए आपकी पूजा करने में सौभाग्य से ही मोक्ष की गति मिल पाती है।

(6) ब्रह्म रूप ज़गतस करान छखय च़य
विष्णु रूप पालन करान च़य
रूद्र रूप संम्हार आखरस करान च़य

मोह दिबान व्यय तथ ति गालान चय
लीलाय यिम चआनी वुछान छुसब़ रंग रंग
जय जय कार आसिनय चानिन लीलायन

हे ज़गत माता आप ही ज़ीवन की सृष्टि, पालन तथा संहार करती हैं, आप ही मोह का नाश करती हैं, आप संसार के मोह से मुक्ति देती हैं। हे माता आप के इन कर्मों व लीला को मैं नमस्कार करता हूँ।

(7) उदयन राज़स ख़ावि प्येठ करान मीठय्
विद्यादर त दीव तस छि आधीन
चक्रवर्त ओहद ओस तमि प्रोवमुत
चानि पादय गर्दी हुन्ज़ि अनुग्रह किनि सूत्य

उदयन नाम के राजा को चक्रवर्ति की पदवी मिली कैसे? जिस माता के पादों को वेद, धर्मात्मा प्रणाम करते हैं, जो इन्हें चूमते हैं। यह सब आपके चरण कमलों से राजा को प्राप्त हुआ था।

(8) चानि चरण कमल सेवाय हुन्द प्रसाद
वश करान लक्ष्मी त व्यय सिद्धियन
शक्ति सु प्रावान मोह रूपी ज्ञानी
अनि गट गालान चान्गि सूत्य ज़न

हे माता, लक्ष्मी वश करने के कर्म में तथा अष्टसिद्धि को अपनी तरफ खींचने में अथवा वश करने के लिए जो सिद्ध मन्त्र हैं, वह घने मोह रूपी अन्धकार के नाश करने लिए द्वीप रूप है, ऐसे ही तुम्हारे चरणकमल से उपाय और अनुग्रह को जीतते हुए कार्य हो।

(9) माता च़्ये मस्तक चन्द्रम् प्रज़लान
राम राम भद्रन्य धून्य चमकवन्य
हृदयस मन्ज़ अग्न ज्योति स्वरूप ज़न
मअज्य चोन स्वरूप छुय प्रकाश आसवुन

हे जगतमाता, आपके सिर में जो चन्द्रमा के किरणों का चमकता हुआ प्रकाश है, ललाट के मध्य में इन्द्रियों व धुन का जैसा प्रकाश और पूजा से जो हृदय में दहकते हुए अग्नि जैसा प्रकाश है यह सब माता आपका ही स्वरूप है।

(10) सारिसय वातिथ च़ कामनादायक
लक्ष्मी कला व्ययि माला रूप
दुशमनस प्यठ जय सुस च़य ललिता
छिय वनान च्यें जया च्यें उमा रूप

हे माता, आपको सर्वव्यापक निर्मल रूप वाली, कुण्डलिनी शक्ति भक्तों की हर कामना पूरी करने वाली, कमल की तरह सुगन्धित और व्यक्त होने वाली सभी कलाओं में युक्त वरमाला रूपवती सुन्दरता का भण्डार, अविजया – जिसको कोई जीत न सके, विजय रूपी, जया रूपी ऐसे ही भिन्न–भिन्न नामों से भक्तजन अस्तुति करते हैं।

(11) युस चोन ध्यान करि धअन पोष रंग सोस
अविनाश कामराज बीज अक्षरस
यौदवय रूप किनि आसि सुय बदशकल
अछ रछ़ वुछन तस कामदीव ज़न

जो भक्त खिले हुए अनार के फेल के समान लाल वर्ण वाला (एक ही अवस्था में रहने वाला) अथवा 'कली' बीज अक्षरवाला आप के रूप को कुरूप के स्थान पर भावना करते हैं, उस कुरूप को भी सुन्दर शक्तिमान रूप में देखते हैं।

(12) ही दीवी चानि दर्शनुक अभिलाष
हर दम नेत्रन मंज़ म्ये रूज़ितन
चआनी गुण बोज़नुक तमन्ना म्ये आसितन
हर दम रूज़ितन म्यानेन कनन
चओन नाम सुमरण च़्यतस मन्ज़ म्ये गरि गरि
चअनि पाद पूज़ा म्यान्यन अथन

चोन कीर्तन करवन्य रूज़ितन म्ये वाणी
उपासना चअनि कम मत म्ये गछ़ितन

ऐ माँ, मेरे नेत्रों को आप को देखने का प्रेम लगाव, कानों को आपके सुनने का राग, चित् में आपको सुमरण करने का, मेरे हाथों में आपकी चरण सेवा का, जीभ में मेरी वाणी, आपके कीर्तन कभी किसी खलल या किसी भी अवस्था में कम न हों। जो भक्त आपका रात-दिन, उठते-बैठते, सोते-जागते में आपका चिन्तन करते हैं उन भक्तों के सब कार्य उस माँ सर्वशक्तिमान के चिन्तन से ही चलते हैं और माँ उसका कार्य स्वयं ही नित्य करके चलाती है।

(13) सरस्वती त्रिपौर सौन्द्री ज़गत माता
भवानीश्वरी छख आसवुन्य च़य
ब्रह्मा रूद्र इन्द्र सूर्य च़न्द्रम कुमार
वैष्णु गणेश छिय पूज़ान च़्यें
अन्दर न्येबर वातिथ च़ त्रिभुवनस सारिसय
गुलि गण्डिथ म्योन प्रणाम वातिनय च़्यें

हे वाणियों की सुमति, तीनों लोंकों की स्वामी, हे जगत जननी ब्रह्मा, इन्द्ररूपी, रूद्र, विष्णु, सूर्य, चन्द्रमा, कौमारी, गणपति तथा अग्निदेव से किए हुए प्रणाम वालों का ज्ञान इन्द्रियाँ और पाँचों प्राणों मन बुद्धि तथा चित्त में स्थिरवाली शक्ति देने वाली माँ आपको बारम्बार नमस्कार हो।

(14) युस यि चोन स्तोत्र परि प्रथ दोह लोल सान
या कनव बोज़ि अद बनि तस कल्याण
चक्रव्रत राज़ करान तस पूज़ा
सअरी मतलब तस छि नेरान
मनचे कामनाय सिद्ध तस छि सपदान
सुय छुय यूग्यिन हुन्द ज़्यादः टोठ बनान

जो भगत माता का यह कल्याणकारी स्तोत्र निशदिन पढ़ता है

उसकी सभी कामनायें सिद्ध हो जाती हैं। वह भक्त राजाओं से भी सुन्दर कहलाया जाता है। वह सिद्धपुरुष आपका प्यारा बनता है।

ॐ नमः महामायायै

अथ घटस्तवः (तीससा स्तव)

(15) ही दीवी छख च़ त्रयम्बक पत्नी
च़्यें वनान सत्ती च़्ये पार्वती
त्रैलोकी हुन्ज़ माता भगवती
च़य वर दिवान च़्य छख मृडानी
च़य त्रिपौर सौन्द्री च़य रूद्राणी
च़य भयानक रूप च़य शूखरी
च़य च़ण्डि च़य त्रिशूल दाराणी
च़य कलि कालस नाश करानी

हे देवी शीलमाया, त्रिभुवन की पत्नी, शंकर की शक्ति पार्वती परमपति सती, हे सत्ती त्रैलोकी माता, ऐ तीनों लोकों की मां (शिवे–बीज अक्षर) कल्याणकारी, शेराँवाली, शंकर की संहार रूपी शक्ति, त्रिपौर तीन अवस्थाओं की साक्षात रूपी मृडाणी (आनन्द देने वाली) शुभ फल देने वाली रूद्राणी, दुष्टों को रौंदने वाली कान्त्यायनी (ऐ सुन्दर रूपी भवानी) दुष्टों के लिए भयानक रूप धारण करने वाली भैरवी, ऐ भैरव रूपी शंकर की शक्ति चण्डी चराचर सर्व सृष्टि को प्रकाशित करने वाली शूरवरी और शिव की शक्ति कल्याणी, चन्द्रकला रूप वाली कालघटायें और काल को नाश करने वालीशिव लिंग दुःखों को नाश करने वाली ऐ माता आपके चरणों में झुके हुए तथा एकांत में लगे हुए मन वाली चारों तरफ से व्याकुल भक्तों की रक्षा कीजिए।

(16) युस पुरुष अकिलीट करि च़्ये कुन प्रणाम्
तसन्ज़ि खावि प्येठ राज़ मुकुट डुलवान

युस पुरुष लोल किनि करि चअनि़ पूज़ा
तस पुरूषस पूज़ान दीव खिल
युस पुरूष करान असि चअनि तुता
दीवता तसन्ज़य अस्तुति करान
युस पुरूष मन किनि करि चोनुय ध्यान
स्वर्गचि अछ रछ़ तस छि सुमराण

हे ज़गत माता जो एक बार ही आपको प्रणाम करता है उनकी तरफ चक्रवर्ति राजा और लोग झुकते हैं जिन राजाओं के पाध्य जीवन या मुक्ति का अभाग्य छूटता है सो शिवभक्त होते हैं जो तुम्हारी पूजा करते हैं उन्हें देवता पूजा करते हैं जो तुम्हारी अस्तुति करते हैं देवता उनकी अस्तुति करते हैं जो तुम्हारा ध्यान करते हैं उन भक्तों की विषय भोग से व्याकुल बनी हुई इन्द्रियाँ वश में हो जाती हैं।

(17) ही ज़गत व्यापिनी युथ शिवनाथस
ईश्वरः नाव ज़गतस मन्ज़ बनान
तिथय पाठय मअज्य भवानी च़्ये ज़गतस मन्ज़
शक्ति हुन्द नाव छुय च़्ये शूभान
योदवय ईश्वर भक्तयन संसारस मन्ज़
मअज कुनि कुनि दौख छु दिवान
आश्च़र्य छु मअज्य चोन क्रूधस प्यठति छखन
पन्यन भक्तयन दौख च़ हावान

हे तीनों लोकों की माता जिस प्रकार ईश्वर शुभ सर्वव्यापक शंकर के लिए लगाया जाता है या जोड़ा जाता है ऐसे ही शक्ति शुभ आपके लिए साधक रूप में जोड़ा जाता है। ऐसा होने पर भी यह तो छुपे रोगों वगैरह आपके भक्तों का भी कष्ट देने में समर्थ बनते हैं आप दयालू होकर उनको नष्ट नहीं करते हैं यह बहुत ही आश्चर्यजनक है।

(18) मतलब छख दिवान दुशमनन च़ गालान
आपदायन छख च़ नाश करान
आधियन ज़ालान व्याधियन शुभरावान
सुख त सम्पदा छख च़ व्यस्तारान
अन्द्रिम दौख त दअध्य प्रिय वैर च गालान
यइम अकि लटि मअज्य ध्यान चोन करान
तिम अद कमि न पाप निश छिय मोकलान
यिम अकि लटि मअज्य ध्यान चोन करान

जो एक ही बार माँ का ध्यान करता है माँ उस भक्त के लिए क्या कुछ अच्छा नहीं करती है। चहेते भक्तों को दया देती है और शत्रुओं का नाश करती है। मन के दुःखों को जलाती है शरीर के रोगों का नाश करती है। सुखों का विस्तार व अम्बार करती है। हर एक के मन से दुःखों को जड़ों से उखाड़ देती है। जुदाई से दूर करती है।

(19) युस करि चोन सुमरण बोज़ि सूत्य युस ज़ानि
विद्याय किनि मअज्य युस च़्यें प्राविय
शुद्ध मन किनि ज़पि नाव चोन ग़रि ग़रि
लोल नेत्रव सूत्य करि दर्शुन
श्रवन किनि मन किञि युस विच़ारि हर वक्त
तोता करि चअनि व्यय पूज़ा
गौण ग्यवि चअनि लोल सान दिन त रात
तमि रौस्तय युस न रोज़ि अक़ साथ़
लक्ष्मी छन तसन्दि द्यरि निशनेरान
जय तस प्रथ वक्त ब्रोंठ छु दोरान

हे माता जो आपका ध्यान करता है जो आपको पाने का यत्न करता है आपका जप करता है आपको देखता है आपका चिन्तन करता है आपका अनुग्रह उस पर होता है आपकी शरण में जो आता है और आपकी स्तुति करता है और आपका आसरा

लेता है आपकी पूजा करता है आपके गुण आदर से सुनता है। उसके घर से लक्ष्मी भागती नहीं है सफलता उसके आगे-आगे दौड़ती है।

(20) कम सना दौख छि तिम ही दौखन गालवन्य
यिम न गलन चानि सुमरण सूत्य
कोस छि नेक नामी ही कोलस खारवन्य
युस न बीन चानि तुताय सूत्य
कोस कोस छि सिद्धि ही सिद्धि धात्री
युस न प्राप्त सपदी चानि पूज़ाय सूत्य
कम कम छि तिम् यूग ही जगतअम्बा
यिम न सिद्ध वनन चानि चि़न्तन सूत्य

राक्षसों का नाश करने वाली माता कौन–कौन सा दुःख है जो आपके सुमरण करने पर नष्ट नहीं होता है। हे जगतरूपी कमल की तरह व्यक्त होने वाली माता, वह कौन–कौन सी कृपा है जो आपकी स्तुति करने पर परम् पदवी नहीं पाता। इन्द्राणी मेरा प्रणाम। प्रणाम की हुई माता वह कौन–कौन सी सिद्धि है जो आपकी पूजा करने पर प्राप्त नहीं होती, वह कौन सा योग है जो आप में मन लगा कर परमसिद्ध नहीं होता।

(21) ही दीवी यिम़ महाकाल सन्दिसय कठिनिस
मौखस मन्ज़बाग्य छि ग़मत्य
ही काली यिम महाकाल सन्ज़ि मौचि
रज़ि चीर पाठय छि गन्डन आमत्य
ही चण्डी यिम बा़रीक तकटिनिस
पापकिस समन्द्रस मंच़ छि फटिमत्य
यलि करन ध्यान चोन त्येलि छख च़ रछान
तिमन मौकलावान व्यय तारान च़य

हे देवी जो जीव महाकाल के कठिन मुंह में पड़े हुए हों, जो महाकाल के फन्दे में ज़ोर से बँधे हुए हों, ऐ चण्डी भगवती जो

कठिन और भारी पापों के समुद्र में डूबे हुए हों उनकी आप अपने सुमरण से रक्षा करती हैं और भवसागर पार कराती हैं।

(22) मअज्य भवानी लक्ष्मी वश करनस प्यठ
पादच गर्द चानि छि ताकत सोस
चानि प्रणाम विज़ि लगि यिमन् ललाटस
पादच गर्द चअनि बडि निशान सोस
सोय पादच गर्द गालि दुर्अक्षर तस
जगतस मन्ज़ बनि सु जय कार सोस

लक्ष्मी वश करने के लिए जो आपके समान शक्ति रखते हैं आपके चरण कमलों की धूल चिरकाल तक जीतते हैं उनके जीतते जीतते भक्त माथे पर लगाये हुए, वह धूल उन ललाटों पर लिखे हुए बुरे अक्षरों को मिटाती है। (जो ललाट पर लिखा हुआ होता है उसे कोई नहीं मिटा सकता है, परन्तु माता ही ऐसी सामर्थ वाली है जो कि प्रणाम मात्र से ही ललाट पर लिखे हुए दुर्अक्षर चुन–चुन कर मिटाती है।)

(23) ही मूढ़ क्याज़ि छुख बे फअयदः तप किनि
प़ननिस शरीरस तकलीफ दिवान
यज्ञ किनि दान किनि बजि दक्षिनाय किनि
क्याज़ि छुख घर पनुन खअली करान
गछ़ शरण माजि शारिकाय प्राव च़ भक्ति
हये करिन अमिसन्ज़्य पाद़य सेवा
अद़ फोलिमत्य पंपोश नेत्रव सोस
लक्ष्मी च़्ये ब्रोंठ ब्रोंठ छिय़ दोरान

हे मूर्ख क्यों वगैर ज्ञान और विधि के तप से अपने शरीर को कष्ट देते हो, कुछ पुरुष बड़ी दक्षिणा वाले और यज्ञों से अपने घरों को खाली करते हैं, लेकिन अगर दृढ़ विश्वास और दृढ़ भक्ति हो तो जगतअम्बा के दोनों पादों की सेवा करे जिसके करने से खिले हुए कमल शोभायमान और लक्ष्मी आगे–आगे

दौड़ती हैं और भक्त को लक्ष्मी के पीछे नहीं दौड़ना पड़ता है।

(24) ही शब्दरूपी निर्मल स्वरूपी
ही दीवी ही त्रिपौर सौन्द्री
कर यथा शक्ति मेति चानि पूज़ा
करि स्वीकार ही परमेश्वरी

शब्द ब्रह्मा रूपी शुद्ध तीनों अवस्थाओं में ठहरी हुई निर्मल त्रिपौर सौन्द्री माता मेरा यथा शक्ति किया हुआ जप व पूजा स्वीकार कीजिए।

(25) रूज़ितन सुखी मअज्य साधक सअरी
यिम दुष्ट आसन तिम् ति सेदितन
शिव रूप अवस्था म्येति मअज्य बनितन
गुरूदीव सदा म्ये प्येठ प्रसन्न रूज़ितन

सभी साधक सन्तुष्ट रहें। दुष्ट दृष्टि वाले दुष्ट निपट (गायब) हो जायें। मुझे औपधि प्राप्त हो और गुरू मुझ पर प्रसन्न रहें। गुरू कृपा के बिना कोई विधि या सिद्धि प्राप्त नहीं होती।

(26) चानि दर्शन पाप सअरि छि गलान
चानि ज़प मृत्यु छि नाश सपदान
पूज़ाय किनि चोन महिमा ग्यवन किनि
ज़ीवस दौख त दअध्य दूर सपदान

त्रिपौर भगवती के मात्र दर्शन से पापों का नाश होता है, उनके जप से मृत्यु नाश होती है, वह पूजा से प्रसन्न होकर दुखों और दुर्भाग्य को मिटाती है।

(27) नमस्कार छुस करान यमिस केशस मन्ज़
चन्द्रम प्रज़लान रात क्यो दिन
संसार केन दौखन छख निवाराण चय
अमृत नदी हन्दि प्रवाह सूत्य ज़न

चन्द्रकला से शोभायमान ईश्वरी संसार के दुःखों को हटाने के लिए अमृत नदी रूपी माता भवानी को प्रणाम करता हूँ।

(28) मन्त्रहीन आसिथ क्रियाहीन आसिथ
विधिहीन आसिथ यि केंछ़ा पोरूम
तथ सअरिसय ही परमेश्वरी च़य
कृपाय किनि म्ये आरतिस माता बख्शतम्

हे माता मन्त्र रहित, क्रिया रहित, विद्या रहित जो कुछ भी मुझसे होता है परमेश्वरी आप इस सबके लिए क्षमा करें।

ॐ अथ अम्बास्तव

(चौथा स्तव)

(29) यस मनीश्वर आदि प्रकृति मानान
यस वनान विद्या वीद रहस्य ज़ानवुन
तस शिवनाथ सन्ज़ अर्धांगी योस
शूभाय सोस ज़गतस छि रछवन्य्
तस आमुत ब़ एकागर च़्यत बनिथ
छुस प्यवान तस पादन प्येठ परन्

जो मनुष्य विद्या नाम से उसे पुकारता है, आपके आधे शरीर के शरण आने से शंकर रूप देवी को, मैं किसी दूसरी देवी के शरण नहीं गया हूँ – आपकी शरण में आया हूँ।

(30) ही माता चअनि तुता करनस प्येठं
ब्रह्मा वाणी ति ज़ड़ बनानी
म्ये शुरि सन्ज़ यि तुता योद छि टूट फूटय
भावनाय किनि हृदयस छि सौख दिवानी

हे माता आपकी स्तुता करने में, परमेश्वर के बनाये हुए वेद रचना भी रूक जाती है यानी इनमें आपका वर्णन करने का सामर्थ्य नहीं है। ऐसा होने पर भी मेरी यह अबुद्धि बालक की स्तुति भक्ति और प्रेम से आपके हृदय को प्रभावित करती है।

(31) आसन यस रूम वथदनि शरीरस
ओश आसयस नेत्रव नेरान
वाणी किनि पद परि गिति गछि गछि

पादन च़्ये आसि युस पूज़ा करान
तस ह्यू कुस सना छु त्रैलोकी मन्ज़
त्रेन भवनन मन्ज़ सुय छु भाग्यवान

हे माता जो प्रकट हुए शरीर के युक्त श्रवणों से बहे हुए आंसुओं से भरे हुए नेत्रों से, हकलाए हुए प्रेम शब्दों से जो भक्त आपके चरणों की लगातार उपासना व सेवा करता है वह भक्त अति भाग्यशाली है।

(32) चरम पौशाक शुभशान भस्मा मलिथ
नच़ान शुमशानन सु भीक्ष मंगवुन
भूत खिल परिवार आसवुन तस शिवस
शूभान त्येलि येलि च़्ये सूत्य छु पकवुन

हे भवानी जो अपने अंगों में चिता की राख मलते हैं जिनका भोजन जहरीला है, मृगछाला, जिनका वस्त्र है, भिक्षा के लिए परिवारों में घूमता है, हे पार्वती ऐसा होने पर आपके सामर्थ से ही शंकर शोभयमान लगता है।

(33) ही माता सिरय च़न्द्रम त तारक
आकाशस प्येठ यिम प्रकाश दिवान
शीषनाग युस कुल पृथ्वी छु दारान
मीद्य यिम रूद ज़गतस त्रावान
वायु फेरान अग्न छु जोतान
यिम सअरि चानि हुक्म सूत्य चलान्

आकाश में जो तारे घूमते हैं, जो बादल पृथ्वी पर वर्षा करते हैं, शेषनाग जो पृथ्वी धारण किये हुए है, वायु जो चलती है, अग्नि में जो ज्योति प्रज्वलित होती है – हे माता यह सब आपकी आज्ञा से ही होती है।

(34) शरीर च़य आसवन्य शक्ति च़य आसवन्य
विराट स्वरूप छख आसवन्य च़्य
जीव आत्मा ध्यान शक्ति क्रिया शक्ति

इन्द्रिय शक्ति आसन शक्ति छख चय़
इच्छा शक्ति ऐश्वर्य परिवार चय़
ग्रहध्यन हुन्ज़ जाय आसवन्य चय़
ज्ञान छख च़ आसवन्य युस स्वरूप शिव सुन्द
सुय स्वरूप छख परिपूर्ण चय़

हे दीवी, आप ही शंकर की शक्ति हो, शरीर आप ही हो, शरीर की सूक्ष्म और विराट स्वरूप आप ही हो, जीव आत्मा ध्यान शक्ति क्रिया शक्ति इन्द्रिय शक्ति समाधि के ऊपर योग आसन, शक्ति ईश्वरी आशीर्वाद देने वाली अनुग्रह और तीनों आवाहन अथवा आप ही में वह कौन सी वस्तु है जो आप नहीं देती हैं। (जो कुछ ज़गत में दिखाई देता है वह सब ईश्वरी माया से ही व्याप्त व प्राप्त होता है।)

(35) केंह छि विद्या केंह छिय आनन्द
केंह छिय माया रूप च़्ये मानान
केंह ज़गत माता साक्षात हद रोस्त
दया स्वरूप गुरू रूप अस्य च़्ये ज़ानान

हे माँ आपको कुछ भक्त प्राणायाम्, कहीं चि़त आकाश रूप, कहीं आनन्दरूप, कही माता नाम से पुकारते हैं परन्तु हम शाक्त मत वाले अप्राण, दयावान, सत्तगुरू मुक्ती रूप आपको मानते हैं।

सकलजननी स्तव (पाँचवाँ स्तव)

(36) केंन्ह ज्ञानी वनान च़्ये 36 तत्वरूप
केंह ज्ञानी वनान च़्यें ब्रह्म शैव रूप
केंह वनान छिय च़्ये मअज्य शिव शक्ति रूप
केंह वनान अमि खोत थोद छु चोन स्वरूप
केंह वनान थदि खोत थदि कुस्तान्य रूप
ही महामाया किथ पअठय बनि असि निशचय
कुस सना अलौकिक छु मअज्य चोन स्वरूप

हे माता भगवती, कई लोग आपके स्वरूप को विष्णु रूप शक्ति कहते हैं कुछ वरदायिनी व कई शिवे मानते हैं। कुछ लोग कुलाकुल रूप शिवशक्ति रूप कहते हैं, इनसे भी भिन्न कई लोग कालि नाम से कहते हैं। कुछ विद्वान इन चारों से भी उत्तम अनोखा स्वरूप वाले नाम से पुकारते हैं। इन सभी भिन्न–भिन्न स्वरूपों को ध्यान में रखते हुए आपकी असली स्वरूप को कैसे हम असली रूप में जान सकेंगे।

ध्यान

(37) यमिसुन्द प्रभाव छुय हद रोस्त आसवुन
भगवान त़ शेषनाग छुन वनिथ हयकान
ब्रह्मा त विष्णु छिन तिम ति चअरि पअठय
ताकत सोस महिमा चोन ज़ानान
सोय चण्डी दीवी रछितन म्ये
योस़ सअरिसय ज़गतस छि पालान
दीतनम तिछ़ शोभ बोद्ध सोय दीवी
यमि सूत्य अशुभ भय नाश सपदान

जिस माँ की महानता का वर्णन भगवान शेषनाग, ब्रह्मा और शंकर भी नहीं कर पाते हैं वह माँ चण्डी जगत पालक हैं, हमें ऐसा ज्ञान दें जिसे सभी जन्मों का उद्धार हो और भय का नाश हो।

(38) ही दीवी यिम प्रथ द़ोह छिय करान
धर्मच कामि बडि आदर सान
स्वर्गस खसान तिम चानि अनुग्रह सूत्य
ज़गतस मन्ज़ छिय तिम् भाग्यवान्
निशचय करिथ मअज्य त्रेन भवनन मन्ज़
च़य छख भवानी युस फल दिवान

हे माँ, जो आदर और भक्ति भाव से अपने काम करते हैं तीनों भवनों में उन्हें फल प्राप्त होता है वह बड़े भाग्यवान होते

हैं और स्वर्ग को प्राप्त होते हैं, बेशक वह सब आपकी (माँ की) शक्ति और अनुग्रह से प्राप्त होता है।

(39) ही दीवी चानि स्मरणि ज़ीवस
सअरी भय छिस नाश सपदान
वारः पअठय येल्य सु करि चोनुय स्मरण
त्येलि छख कल्यानच बौद्ध च़ तस दिवान
दारिद्र भाव भय व्ययि कठिन दौख त गम
कुस सना च़्ये रोस्त मअज्य दूर तिमन् करान
उपकार छख करान ही मअज्य सारिनय
हर हमेशा कोमल च़्यत सोस च़ रोजान

हे देवी, आपकी भक्ति करने से दुःख और तकलीफ दूर हो जाते हैं, आपकी दया के वगैर यह दुःख दूर नहीं होते हैं। कठिनाई और दुःख दूर होने से मन चिन्तारहित होता है और हमेशा चिन्तन से सदा कोमल हृदय में आपका निवास रहता है।

(40) खराब चलन ही मअज्य छख बनावान शांत
आसवुन छुय योहय चोनुय स्वभाव
रूप चोन आसवुन ही माज्य स्वरणी
चअनि रूपुक हद छिन केंह लभान
दीवन नाश गोमुत युस सामर्थ
छख तिमन पुरूषार्थ वडावान
शत्रुन प्येठ छख ही मअज्य भवानी
दयायि स्गेस तिमन दया छख प्रकट करान

अगर किसी प्राणी के कर्म अनुसार खराब चलन हैं तो उसे आपकी दया से शान्ति प्राप्त होती है। आपका सुमार्ग मन को मोह लेता है। आपके रूप की व्याख्या कौन कर सकता है? देवताओं की जो शक्ति है वह सब आपकी दया से ही इस प्रकार अपने भक्त को ताकत और बुद्धि बढ़ाती है।

(41) कुस करि बराबरी मअज्य चानि वीरताय
चोन रूप शत्रुन भय दिवानी
कुनि जाय चोन रूप मनोहर आसवुन
दयायि सोस कुनि जाय छख थवानी
लडाय मन्ज़ रूप चोन कठोर मअज्य आसवुन
त्रैन लूकन छख वर दिवानी

हे देवी माँ, आपकी वीरता सबसे महान है। आपके काली रूप से शत्रु काँप उठते हैं और बढ़ने से आप उनका नाश करती है। सुन्दर रूपी भक्तों के दिलों में वास करती हैं और भक्तों को अपना सन्मुख दर्शन देती है।

(42) सारिनय दुशमनन लडाय मन्ज़ नाश करिथ
वचावथन च़्ये मअज्य त्रैलूकी
मारिथक राक्षस लडाय मन्ज़ ही मअज्य
खारिथक च़्ये स्वर्गस ही भवानी
नाश कोरूथ दुशमनन अस्य भय दूर कोरूथ
अस्य च़्ये माता गुलि गण्डिथ प्रनाम करानी

हे माता, आपने काली रूप धारण करके तीनों लोकों में अपने दुश्मनों का नाश किया। राक्षसों को मार कर उनके कर्मों का भी सुधार किया और उन्हें स्वर्गलोक में पहुँचाया। उनको पापों से मुक्त किया। यह आपकी शक्ति का ही प्रमाण है। इसी तरह आप सदा अपने भक्तों को मोक्ष प्रदान करती हैं।

(43) पननि त्रिशूल सूत्य रच्छत अस्य ही मअज्य
खडग सूत्य रच्छत अस्य ही माता
घन्टाय शब्द सूत्य रच्छत अस्य ही मअज्य
कमान्य शब्द सूत्य रच्छत अस्य ही माता

माँ जगतअम्बे अपने भक्तों की रक्षा सदा चतुर्भुज रूप धारण करके और उन हाथों में त्रिशूल, खंडर, खंजर और तीर कमान की शक्ति से रक्षा करती हैं।

(44) पूरि किनि रच्छत अस्य पश्चम किनि रच्छत अस्य
ही चण्डी रच्छ अस्य दक्षण किनि
फिरनाव त्रिशूल पनुन अस्य चोपारी ही मअज्य
ही माता रच्छ अस्य उत्तर किनी

हे जगतअम्बे परमेश्वरी, अपने भक्तों की चारों दिशाओं यानी पूर्व, पश्चिम, दक्षिण और उत्तर से रक्षा करती रहें।

(45) सौन्दर रूप चअीन माता यिम च़्ये आसवन्य
त्रैलोकी मन्ज़ फेरानी
घौर रूप कठिनि रूप यिम चअनि आसवन्य
तीमन सूत्य अस्त त पृथ्वी रच्छ चौपारी

माता, आपके जितने भी रूप हैं और तीनों लोकों में व्यापक हैं, गुरू रूप धारण करके जब भक्तों को कठिन रास्तों से पार करना पड़ता है और यह भक्त सच्ची भक्ति प्राप्त करते हैं, इस गुरू रूप से आप इन भक्तों और पृथ्वी की रक्षा करती हैं।

–: क्षमा स्तुति :–

(46) मन्त्र त तन्त्र छुस न केंह ज़ानान
ज़ानान छुस न माता चअन्य महिमा
आवाहन त ध्यान छुस न केंह ति ज़ानान
ज़ानान छुस न माता चअन्य तुता
मुद्राय चानि मअज्य छुस न केंह ति ज़ानान
ज़ानान छुस न माता चोन विलपन
वअड हिश युक्ति मअज्य छुस ब़ जानान
च्यें पत पत पकिथ दौख नाश सपदान

हे माता, आपको खुश रखने के लिए जो भक्ति भावना पैदा नहीं होती है क्योंकि मैं अज्ञानी हूँ, नादान हूँ मन्त्र, तन्त्र, क्रिया विधि आपके चरणों के पास आने का रास्ता नहीं जानता हूँ लेकिन इतना जानता हूँ कि जिस प्रकार की मैं आपकी भक्ति करता हूँ, पूजा करता हूँ मेरे कष्ट दूर होंगे और जीवन सफल

होगा, यह मेरा अटल विश्वास है।

(47) छुस विधि न ज़ानवुन धन रोस्त त आलच़्य
चरण सेवा चअनि छुस न कें़ह करान
यछ़ि हाल सोस छुस ब करतम क्षमा
ही माता सारिनय छख उद्धार करान
कुपुत्र छि ज़गतस मन्ज़ पअद सपदान
माता कुमाता ज़ॉह ति छन बनान

हे माता, मैं पूजा पाठ की कोई विधि नहीं जानता हूँ, मैं निर्धन हूँ, आलसी हूँ, बेटा कुपुत्र हो सकता है पर माता कभी कुमाता नहीं होती, आप उद्धार करने वाली परम् शक्ति माँ हो, मेरे पापों को क्षमा करो, मुझे भक्ति और ज्ञान दो और मेरे कर्म सँवार दो।

(48) माता पृथ्वी प्येठ स्यठा च़्ये सन्तान
तिमन मन्ज़ ब़य योत छुसय नाबकार
छख म्ये त्रावान माता छुय न च़्ये य जायिज़
ही पार्वती कोनय छख विच़ारान
कुपुत्र छि ज़गतस मन्ज़ पअद सपदान
माता कुमाता ज़ॉह ति छन बनान

हे माता पार्वती, इस पृथ्वी पर सब आपके सन्तान हैं जिन में से मैं सबसे निकम्मा हूँ और नाकाबिल हूँ। मुझे ऐ माँ भूल मत जाओ कुपुत्र को कुपुत्र समझ कर। माता पृथ्वी अपने चरणों की सेवा करने की भक्ति प्रदान करो।

(49) ही ज़गत माता चअनि चरण सेवा
न करूम पथ कुन नय वुन्यकेन करान
चानि बापत खर्च कुनि कुरूम न अज़ताम
नय वुन्यकेन च़्ये पत धन ब खर्चान
तोति छख च़्य सु माता यस छुम्योन हद रोस्त
महोबत त युस छम म्ये गरि गरि रछान

कुपुत्र छि ज़गतस मन्ज़ पअद सपदान
माता कुमाता ज़ॉह ति छन बनान

हे ज़गतमाता, मैंने आपकी चरण सेवा नहीं की है और न ही कर पाता हूँ, धनहीन हूँ कुछ भी भोग नहीं चढ़ा सकता हूँ फिर भी माँ आपके आशीर्वाद से मैं कुपुत्र होकर भी और आप सदा सुमाता होकर मेरी रक्षा करती रहती हैं। यह मेरा सौभाग्य है। अपने परम प्रेम व्यवहार से मेरे चंचल मन को स्थिर कर मुझे ज्ञान दो ताकि मेरा जीवन सफल हो।

(भोग चढ़ाते समय यही मन्त्र (श्लोक) पढ़ना चाहिए)

(50) सारिनय दीवन हन्ज़ सीवा म्ये त्राव
सपुदयोमुत छुस ब़ स्यठा व्याकुल
85 वरीह गुज़रावि म्ये उम्र हुन्द्ध
सपुदयोमुत छुस ब मअज्य स्यठा निर्बल
वौन्य योदवय म्ये बनि न चअनि कृपा ही मअज्य
थपि़ रोस छुसय ब माज्य कस गछ़ शरण

हे माँ जगतेश्वरी, मैं व्याकुल हूँ परेशान हूँ, सारा जीवन बेकार हो गया। मुझे विचार मिलते हैं कि मैं कोई पूजा अर्चना दैव गुण ही नहीं कर पाता हूँ। मुझे सहारा दो, जो कृपा देवताओं व संत्तजनों पर की है, मुझे वैसा ही ज्ञान दो, ताकि मैं जीवन का अन्तकाल आपकी सेवा में ही गुज़ार दूँ, मुझ पर कृपा करो।

(51) चि़न्ता भस्मा मलिथ यस ज़हर छुय खुराक
नन्गै त कल माल नअल्य त्रावान
वासुक हटि यस युस जटा छु धारान
भूत यस स्वामी पनुन छि मानान
सुय शिव ज़गतकिस स्वामी भावस
ही माता चअन्य अथवास छु वातान

तन पर भस्म लगाकर और जिसकी खुराक जहर है, जिस के गले में वासुक है और जटा धारण किये हैं, इस जगत का

स्वामी है वह सब महान शक्ति रूप सिर्फ आपका ही है और भक्त को सदा आपका सहारा चाहिए।

(52) छम न मअज्य मोक्ष च काँक्षा आसवन्य
बेयि छम न वैभव चति माज्य काँह यछ़ा
ज्ञानच अपेक्षा छम न मअज्य म्ये आसवन्य
सौरव यच्छ़ा ति माता छुसन काँछान
छुस व माता च्यें मंगान ज़िन्दगी गुज़ार
शिव शिव भवानी ज़प करान करान

हे माँ, मैं लाचार आपका दास हूँ। मुझे आवागमन, धन, दौलत, वैभव, सुख और आराम की चिन्ता नहीं है। मेरी बस एक ही इच्छा और लालसा है कि मैं ज़िन्दगी का सफर शिवरूपी जप और तप में गुज़ार दूँ। मेरी यह इच्छा पूरी करो ताकि मेरा जन्म सफल हो। मेरी प्रार्थना पर ध्यान दो और मनोकामना पूरी करो माँ।

15. दुर्गा चालीसा

नमो नमो दुर्गे सुख करनी
    नमो नमो अम्बे दुख हरनी
निरंकार है ज्योति तुम्हारी
    तिहूँ लोक फैली उजियारी
शशि ललाट मुख महा विशाला
    नेत्र लाल भृकुटि विकराला
रूप मातु को अधिक सुहावै
    दरस करत जन अति सुख पावे
तुम संसार शक्तिमय कीन्हा
    पालन हेतु अन्न धन दीन्हा
अन्नपूर्णा हुई जगपाला
    तुम ही आदि सुन्दरी बाला

प्रलय काल सब नाशनहारी
तुम गौरी शिव शंकर प्यारी
शिव योगी तुम्हारे गुण गावैं
ब्रह्मा विष्णु तुम्हें नित ध्यावैं
रूप सरस्वती का तुम धारा
दे सुबुद्धि ऋषि मुनिय उबारा
धरो रूप नरसिंह को अम्बे
प्रकट भई फाड़ के खम्बे
रक्षा कर प्रहलाद बचायो
हिरण्याक्ष को स्वर्ग पठायो
लक्ष्मी रूप धरो जग माही
श्री नारायण अंग समाही
क्षीर सागर में करत विलासा
दयासिन्धु दीजै मन आसा
हिंग्लाज में तुम्हीं भवानी
महिमा अमित न जान बखानी
मातंगी धूमावती माता
भवानीश्वरी बंगला सुखदाता
श्री भैरव तारा जग तारिणी
छिन्न बाल भव दुःख निवारिणी
केहरी वाहन सोह भवानी
लाँगुर वीर चलत अगवानी
कर में खप्पर खडग विराजे
जाको देखि काल डरि भाजे
सोहे अस्त्र और त्रिशूला
जाते उठत शत्रुहिय शूला
नगरकोट में तुम्हीं विराजत
तिहूं लोक में डंका बाजत

शुम्भ निशुम्भ दानव तुम मारे
रक्तबीज शंखन संहारे
महिषासुर नृप अति अभिमानी
जेही अधमार मही अकुलानी
रूप कराल कालि को धारा
सेन सहित तुम तिहि संहारा
परि गाढ़ सन्तन पर जब जब
भई सहाय मातु तुम तब तब
अमरपुरी अरू वासव लोका
तुम महिमा सब कहँ अशोका
ज्वाला में है ज्योति तुम्हारी
तुम्हें सदा पूजें नर नारी
प्रेम भक्ति से जो जस गावैं
दुःख दरिद्र निकट नहिं आवें
ध्यावैं तुम्हें जो नर मन लाई
जन्म मरण से जो छूट जाहिं
जोगी सुर मुनि कहत पुकारी
योग न होय बिन शक्ति तुम्हारी
शंकर आश्चर्य तब कीन्हों
काम अरू क्रोध जीति सब लीन्हों
निश दिन ध्यान धरो शंकर को
काहू काल नही सुमिरो तुमको
शक्ति रूप को मरम न पायो
शक्ति गई तब मन पछितायो
शरणागत हुई कीर्ति बखानी
जय जय जय जगदम्बे भवानी
भई प्रसन्न आदि जगदम्बा
देई शक्ति नहिं कीन विलम्बा

मौको मातु कष्ट अति घेरो
तुम बिन कौन हरे दुःख मेरो
आशा तृष्णा निपट सतावै
रिपु मूर्ख मोहे अति डर पावै
शत्रु नाश कीजे महारानी
सुमिरौ इक चित तुम्हें भवानी
कृपा करो हे मातृ दयाला
ऋद्धि सिद्धि दे करहु निहाला
जब लगिं जियो दया फल पाऊँ
तुम्हरे जस मैं सदा सुनाऊँ
दुर्गा चालीसा जो गावैं
सब सुख भोग परम पद पावै
देवीदास शरण निज जानी
कृपा करो जगदम्बे भवानी।

16. हनुमान चालीस

श्री गुरू चरण सरोज रज निज मन मुकरि सुधारि
बरनऊ रघुवर विमलजसु जो दायकु फल चारि
बुद्धिहीन तनु जानिके सुमिरौं पवन कुमार
बल बुद्धि विद्या देहि मोहि हरहु कलेस विकार
जय हनुमान ज्ञान गुण सागर
जय कपीस तिहुँ लोक उजागर
राम दूत अतुलित बल धामा
अंजनि पुत्र पवन सुत नामा
महावीर विक्रम बजरंगी
कुमति निवार सुमति के संगी
कंचन वरण विराज सुबेसा
कानन कुण्डल कुंचित केसा

हाथ वज्र और ध्वजा विराजे
काँधे मूँज जनेऊ साजै
संकर सुवन केसरी नंदन
तेज प्रताप महाजगबन्दन
विद्यावान गुणी अति चातुर
राम काज करिबे को आतुर
प्रभु चरित्र सुनिबो को रसिया
राम लखन सीता मन बसिया
सूक्ष्म रूप धरि सियहिं दिखावा
विकट रूप धरि लंक जरावा
भीम रूप धरि असुर सँहारे
रामचन्द्र के काज सँवारे
लाय संजीवन लखन जियाये
श्री रघुवीर हरषि उर लाये
रघुपति कीन्हीं बहुत बड़ाई
तुम मम प्रिय भरतहि सम भाई
सहस बदन तुम्हरो जस गावैं
अस कहि श्रीपति कण्ठ लगावें
सनकादिक ब्रह्मादि मुनीसा
नारद सारद सहित अहिसा
जम कुबेर दिगपाल जहाँ ते
कवि कोबिद कहि सके कहाँ ते
तुम उपकार सुग्रीवहिं कीन्हा
राम मिलाय राजपद दीन्हा
तुम्हरो मन्त्र विभीषन माना
लंकेश्वर भए सब जग जाना
जुग सहस्त्र जोजन पर भानू
लील्यो ताहि मधुर फल जानूँ

प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं
जलधि लाँघि गए अचरज नाहीं
दुर्गम काज जगत के जेते
सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते
राम दुआरे तुम रखवारे
होत न आज्ञा बिनु पैसारे
सब सुख लहै तुम्हारी सरना
तुम रच्छक काहू को डरना
आपन तेज सम्हारो आपे
तीनों लोक हाँक ते काँपे
भूत पिसाच निकट नहीं आवे
महावीर जब नाम सुनावे
नासै रोग मिटे सब पीरा
जपत निरंतर हनुमत वीरा
संकट ते हनुमान छुड़ावैं
मन क्रम ध्यान जो लावै
सब पर राम तपस्वी राजा
तिन के काज सकल तुम साजा
और मनोरथ जो कोई लावै
सोई अमित जीवन फल पावै
चारों जुग प्रताप तुम्हारा
है परसिद्ध जगत उजियारा
साधु संत के तुम रखवारे
असुर निकंदन राम दुलारे
अष्ट सिद्धि नौ निधि के दाता
अस वर दीन जानकी माता
राम रसायन तुम्हरे पासा
सदा रहो रघुपति के दासा

तुम्हरे भजन राम को पावै
जन्म जन्म के दुःख बिसरावै
अंत काल रघुवर पुरजाई
जहाँ जन्म हरि भक्त कहाई
और देवता चित्त न धरई
हनुमत सेई सर्ब सुख करई
संकट कटे मिटे सब पीरा
जो सुमिरे हनुमत बलवीरा
जै जै जै हनुमान गोसाईं
कृपा करो गुरू देव की नाईं
जो सत बार पाठ कर कोई
छूटहिं बंदि महा सुख होई
जो यह पढ़े हनुमान चालीसा
होय सिद्धि साखी गौरीसा
तुलसीदास सदा हरि चेरा
कीजै नाथ हृदय महँ डेरा
पवनतनय संकट हरण मंगल मूरति रूप
राम लखन सीता सहित हृदय बसहु सुर भूप।।

17. शिव चालीसा

जय गिरिजापति दीन दयाला
सदा करत सन्तन प्रतिपाला
भाल चन्द्रमा सोहत नीके
कानन कुण्डल नागफनी के
अंग गौर शिर गंग बहाये
मुण्डमाल तन क्षार लगाये
वस्त्र खाल बाघम्बर सोहे
छवि को देखि नाग मुनि मोहे

मैना मातु कि हवे दुलारी
वाम अंग सोहत छवि न्यारी
कर त्रिशुल सोहत छवि भारी
करत सदा शत्रुन क्षयकारी
नंदि गणेश सौहे तहं कैसे
सागर मध्य कमल है जैसे
कार्तिक श्याम और गणसऊ
या छवि को कहि जात न काऊ
देवन जबहिं जाय पुकारा
तबहिं दुख प्रभु आप निवारा
किया उपद्रव तारक भारी
देवन सब मिलि तुम्ही जुहारी
तुरत षडानन आप पठायऊ
लव निमेष महँमारि गिरायउ
आप जलंधर असुर संहारा
सुयश तुम्हार विदित संसारा
त्रिपुरासुर सन युद्ध मचाई
तबहिं कृपा कर लीन बचाई
किया तपहिं भागीरथ भारी
पुरव प्रतिज्ञा तासु पुरारी
दानिन मह तुम सम कोऊ नाईं
सेवक स्तुति करत सदाही
वेद माहिं महिमा तुम गाईं
अकथ अनादि भेद नहीं पाई
प्रकटि उदधी मंथन में ज्वाला
जरत सुरासुर भए विहाला
कीन्ह दया तहं करी सहाई
नीलकण्ठ तब नाम कहाई

पूजन रामचन्द्र जब कीन्हा
जीत के लंका विभीषण दीन्हा
संहस कमल में हो रहे धारी
कीन्ह परीक्षा तबहिं त्रिपुरारी
एक कमल प्रभु राखेऊ जोही
कमल नैन पूजन चहुँ सोईं
कठिन भक्ति देखि प्रभु शंकर
नये प्रसन्न दिय इच्छित वर
जय जय जय अनंत अविनाशी
करत कृपा सब के घटवासी
दुष्ट सकल नित मोहि सतावे
भ्रमत रहे मोहि चैन न आवै
त्राहि त्राहि मैं नाथ पुकारूँ
यह अवसर मोहि आन उबारो
लै त्रिशूल शत्रुन को मारो
संकट से मोहि आन उबारो
मात–पिता भ्राता सब कोई
संकट में पूछत नहिं कोई
स्वामी एक है आस तुम्हारी
आय हरहु मम संकट भारी
धन निर्धन को देत सदा ही
जो कोई जाँचे सो फल पाहीं
स्तुति केहिं विधि करें तुम्हारी
क्षमहू नाथ अब चूक हमारी
शंकर हो संकट के नाशन
विघ्न विनाशन मंगल कारन
योगी यति मुनि ध्यान लगावैं
नारद शारद शीश नवावें

नमो नमो जय नमः शिवाय
सुर ब्रह्मादिक पार न पाय
जो यह पाठ करे मन लाई
तो पर होत है शम्भु सहाई
ऋनियाँ जो कोई हो अधिकारी
पाठ करे सो पावन हारी
पुत्र हीन कर इच्छा कोई
निश्चय शिव प्रसाद ते ही होई
पण्डित त्रयोदशी को लावे
ध्यान पूर्वक होम करावे
त्रयोदशी व्रत करे हमेशा
तन नहिं ताके रहे कलेशा
धूप द्वीप नैवेद चढ़ावे
शंकर सम्मुख पाठ सुनावे
जन्म जन्म के पाप नसावे
अन्तवास शिवपुर में पावे
नित नेम उठि प्रातः ही पाठ करें चालीस
तुम मेरी मनोकामना पूर्ण करो जगदीश।

18. गणेश स्तुति

च्यानि पूज़ायि हुन्द त्रोव प्रस्थान
महागणेश गौडहा धारय चोनुय ध्यान
असि आय समिथ अज़ छु शौभ देय्न
माजि दुर्गायि हुन्द कर्व कीर्तन
चानि सुमरण व्यग्न दूर छि सपदान .... (1)
नाव चोन आदि दीव सिद्धिदाता
अस्य आरितेन प्येठ कर सहायता
वीद गौढ चआन्य पूजा छि व्यखनान .... (2)

शास्त्र वनान छिय जाय जाये
युस चोन ध्यान स्वरि सिद्धि सु प्रावे
सअरी दीव गौढ़ च़्य छि पूज़ान .... (3)
भक्ति भाव सूत्य यस सन्तुष्ट छुकरोज़ान
त्येलि छुन तस ब्राठ कीन कॉह भय पोरान
व्यग्न त भय छि दूर सपदान .... (4)
गुलि गंडिथ च़्यें कुन छुस प्रणाम करान
सानि पूज़ाय हुन्द शोभ अन अनजाम
हे गणपत अस्य प्येठ रोज़ दयावान .... (5)
अस्य छि यिवान योर सुब शामन
आशम ह्वथ रोटमुत चोनुय दामन
दूर कर व्यग्न अस्य समिति सान
महागणेश गौडहा धारय चोनुय ध्यान .... (6)

19. भगवती की आरती

ॐ श्रीमत मअज्य भवानी छम म्ये आशा चअन्य
क्षण सय मंन्ज़ दौखत संकट दूर करतय च़ सानिय
छय च़्यें 18 भुज भवानी छख सह़स प्येठ च़ सवार
अन्दय अन्दय छि दीवता सअरी छिय करान च़्ये ज़ारपार
अष्ट सिद्धि आ़धीन छय पाद चअन्य नेत छलानी ....
सिरिय तय व्यय चन्द्रम छिय प्राराण च्अनिस हुकमस
कर करि मअज्य भवान्य आ़ज्ञान्या प्रकाश बनि ज़गतस
चअनि प्रकाश किनि संतुष्ट त्रिभुवन छु रोज़ानी ....
येलि यन्द्राज़ बेयि दीव अनि तंग महिषासुरनय
यन्द्राज़ ओय च़्ये शरण्य पादन च़्ये प्योय परनय्
पत पत तस दीवता आय फ्रक़ ह्वति त दोराणी ....
बूज़िथ तिहुन्द हाल सोरूय अद महिषासुरनय वातानोवथनय
पाताल

यलि ज़ीर दिचथ खोर सूत्य मोकलविथकय भीम भय निश दीव
करथक मेहरबानी ....
ॐ शब्द छकय सर्वशक्तिमान महामाया च़्ये वनान
काम क्रोध लोभ मोह त अन्धकार भक्तयन छक च़ कासानी
चअन्य भक्ति शिव शक्ति रूप ध्यान चोन दाऱानी ....
बोज़ान छख विनती च़य यति चोनुय छु दरबार
चानि हुकम सूत्य सारय ज़गतुक छुय चलान अद कारोबार
अस्य छि आमत्य अर्ज़ करने दोरान त लाराणी ....
माज्य बोज़तम छम म्ये हाजत अक़ भक्ति चअनी
गरि गरि रोज़तम म्ये सन्मोख हृदयस मंज़ भवानी
सरस्वती हुन्द प्रसाद युथम्येवीन नेरेम अमृत वाणी ....

20. भवानी लीला

रात गयि सअरय प्रकाश नोन द्राव
मअज भवान्य आरतिस च़ दर्शुन हाव
लूसुस वुछान वुछान व रात्य रातस
ज़ाग हृथय बूय्ठुस व यथय साथस
कर सना बुछ ब़ चानि मौखकुय प्रभाव ....
प्रारान वोतुम स्यठा यच़काल
मअज्य भवान्य योदवय छख च़ दीन दयाल
दासस प्येठ करत अनुग्रहक स्वभाव ....
गाश आव चौ़पार्य सअरय्सिय ज़गतस
म्ये यच़ गट छम अन्दिर हृदयस
ग़ट कास अन प्रकाश हृदय म्योन फोलराव ....
कस वन् च़्यें रोस्त मअज्य कुस छु म्योन
आशा उम्मीदा सख ढोख़ छुम चोन
दिम् म्येति भवसरस तार म्येण नाव ....
भव सागरस मंज़ छुस व़ फोटमुत

थप करूम़ नत छुसय मार सपुदमुत
कढ़ म्ये च़ अमि मन्ज़ मअज मोकलाव ....
छुस अनाथ मअज्य यितनय म्योन आर
चानि दयायि बापत छुस ब़ बेमार
भक्तिस दयायि हन्ज़ द्रष्टीया च़ त्राव ....
छम म्ये इन्द्रिय पननि करान छ्रूठ छ्रूठ
तम्बलावान छम म्ये विषयन प्येठ
सतसंगस किस आसनस प्येठ म्ये बेहनाव ....
छुस मुसाफिर ब़ द्रामुत सफरस
छुस दिवान कदम कदम यथ मंज़िलस
वार पअठय म्योन सफर अन्द वातनाव ....
नावि चानि छुस बिहिथ भवसागरस
पय छमन लग़ कोत़ कथ तरफस
परम् पदस कुनुय लाग च़ सान्य नाव ....

21. नवदुर्गा लीला

कॉसि वननस रूदुम न वारय, नवदुर्गा करि म्योन चारय
लगिमित छि चानिस ज़पसय, सिद्धि कर म्यानिस तपसय
प्रथ कारस छम यति लारलारय ....
शैल पुत्री कन थाव म्यानेन नादन, प्राण वन्दहय चान्येन पादन
कन थावतम त बोज़ुम ज़ारपारय ....
ब्रह्मचारिणी ब्रह्म निश रछिज़्यम, शोभ मौरव म्ये दर्शुन हावतम्
मतय त्रवतम् यमि संसारय ....
चन्द्रघण्टे कासतम म्ये खअरी, लोल मन सूत्य करहय ब़ ज़ारी
ज़्यूठ संसार त क्रूठ व्यवहारय ....
कूष्माण्डी लग़हय ब़ नावस, अर्पण छुसय चानिस भावस
मौकलाव तमि नरकन्य नारय ....

स्कन्दमाते शरण ब़ आसय, काम क्रोध लोभ मोह माता कास्तय
नाव चानि सूत्य नावि लग्येम तारय ....
कॉत्यायने मुशिकिलन करूम हल, अंहकारन रोटुमुत छुनस तल
चार करतम ब़हय गोमुत मारय ....
कालरात्रि काल भय में कास्तम, परिपूर्ण मनस मन्ज़ म्ये भासतम
गाश हावतम मन्ज़ अन्धकारय ....
महागौरी शरण ब आसय, पाप म्यानी माता च़ कास्तय
मौकलावतमि नरकन्य नारय ....
सिद्धि धात्री सिद्ध कर म्ये वाणी, तुलमुलि छय थापना चअनी
ॐ समिति करान ज़ारपारय ....
सिद्धि दात्री सिद्धी म्ये करतम, इनि गछ़न निश मअज्य मोकला वतम्
अस्य सअरी करान जारपारय ....
दास चअनि वलिमत्य छि गमनय 'पोष चमनय' छु सडानावान
चमनस मन्ज़ छय मुशकिन्य दारय ....
कॉसि नय रोटुस म्योनय या भारय ....

22. आरती

ॐ जय जगदीश हरे स्वामी जय जगदीश हरे
भक्तजनों के संकट दास जनों के अपराध
क्षण में दूर करे ....
जो ध्यावे फल पावे दुःख विनशे मनका
सुख सम्पति घर आवे कष्ट मिटे तन का ....
माता पिता तुम मेरे शरण पडूँ मैं किसकी
तुम बिन और न दूजा आश करूँ जिसकी ....
तुम पूर्ण परमात्मा तुम अन्तर्यामी
पारब्रह्म परमेश्वर पार ब्रह्म जगतेशवर
तुम सबके स्वामी ....
तुम करुणा के सागर तुम पालन करता

मैं मूरख कल कामी मैं सेवक तुम स्वामी कृपा करो भर्ता ....
तुम हो एक अगोचर सबके प्राणपति स्वामी सबके प्राणपति
किस विधि मिलूँ दयालू कैसे मिलूँ कृपालू तुमको मैं कुमति ....
दीन बन्धु दुःख हर्ता तुम रक्षक मेरे स्वामी तुम रक्षक मेरे
अपने हाथ बढ़ाओ अपने चरण लगाओ द्वार पड़ूँ मैं तेरे ....
विषय विकार मिटाओ पाप हरो देवा स्वामी शाप हरो देवा
श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ श्रद्धा प्रेम बढ़ाओ सन्तन की सेवा ....
श्याम सुन्दर जी की आरती निशदिन जो गावें स्वामी हर दिन जो गावें
कहत शिवानन्द स्वामी कहत हरीहर स्वामी मनवाँछित फल पावे ....

23. नारायण आरती

भजुमन नारायण, नारायण, नारायण ॐ
श्रीमत नारायण, नारायण, नारायण ॐ
तू ही ब्रह्मा तू ही विष्णु तू ही है त्रिपुरारी
तू ही जग का पालन करता तू ही है सम्हारी
राम लखन हनुमाना तू ही तू ही कृष्ण मुरारी ....
तू ही ऋद्धि तू ही सिद्धि उपनिषद और वेद
सारे जगत का तू ही रचेता तेरा न जाने भेद
लीला तेरी मायादारी भक्तन लागे प्यारी ....
तू ही राघव तू ही माधव तू अर्जुन और द्रोण
तू ही शूर है तू ही वीर है तुझ से बड़ा है कौन
तू ही विद्या तू ही दानी अस्त्र शस्त्रधारी ....
साँस भी तू ही प्राण भी तू ही तू आँखों का नूर
तू ही अग्नि तू ही वायु नहीं किसी से दूर
तू ही जीवन तू ही मृत्यु तू बालक नर नारी ....

तू ही साधु तू ही योगी तू नदियों का नीर
तू ही पण्डित तू ही ज्ञानी तू ही मलंग फकीर
सुख भी तेरे दुःख भी तेरे तू भक्तन हितकारी ....
पाप भी तेरे पुण्य भी तेरे, तेरे हैं दिन रात
सत्य भी तू ही असत्य भी तू ही साहस और विश्वास
मस्ताने पर कृपा करो चक्र सुदर्शनधारी ....

24. सीताराम

(1001) पढ़ें

सीताराम	सीताराम	सीताराम	सीताराम	सीताराम
सीताराम	सीताराम	सीताराम	सीताराम	सीताराम
सीताराम	सीताराम	सीताराम	सीताराम	सीताराम
सीताराम	सीताराम	सीताराम	सीताराम	सीताराम
सीताराम	सीताराम	सीताराम	सीताराम	सीताराम
सीताराम	सीताराम	सीताराम	सीताराम	सीताराम
सीताराम	सीताराम	सीताराम	सीताराम	सीताराम
सीताराम	सीताराम	सीताराम	सीताराम	सीताराम
सीताराम	सीताराम	सीताराम	सीताराम	सीताराम
सीताराम	सीताराम	सीताराम	सीताराम	सीताराम
सीताराम	सीताराम	सीताराम	सीताराम	सीताराम
सीताराम	सीताराम	सीताराम	सीताराम	सीताराम

25. गुरू लीला

कलि चान्ये चशम लोसम म्ये प्रारि प्रारि
गुरू म्याने पादन लगय पअरि पअरि
मंज कोलाबस प्राण अलहुंद म्ये त्रोवमय्
बन्द बन्द हर बन्द अलहुॅद म्ये त्रोवमय

धर्म श्राख्यै कर्म मुण्डिस प्येठ म्ये शेर ....
    गोछ़ ना आसुन शीरिथ ख्यन वानन
गोछ़ ना आसुन बरिथ़ मस प्यालन
    म्येति लोलस त माये कर्यमय ढेर ....
अथ छोऩ छुस न्यथ नोन क्या व ख्यावथ
    येति क्या छुम ति ब़ नोश कर नावथ
राग चान्ये बेहाल आमुत ब ज़ेर ....
    मांज़ पननुय ब़ फलि फलि ख्यावनावथ
हटि के रथ मस प्याल चावनांवथ
    येति म्योन क्या छुयि छुचानि फज़लुक खंअर ....
चअन्य शब्दन कति कोत वातनोवनस
    वथ म्ये हावनम यलि यलि वति रोवुस
चअनि दर्शन इला म्येति वाते खअर ....
    गौर गुरनय मन्ज़ म्योन क्या छु शूभान
मौख अमिसुन्द च़ोर वीद छिय व्यखनान
    म्यानि बोज़नच त चानि वननच छय तअर ....
वुछ म्ये बूद्धन मंन्ज़ महाबौद्ध रोज़ान
    बूद्ध अ़सित सुय नाबूद रोज़ान
तोता बोलान कुनि बोलान छय हअर ....
    छु मस्तान मन किनि च़्ये पूज़ान
गौर छु ईश्वर, ईश्वर गौर च़य ज़ान
    बनि यकसान क्याज़ि लागान छुक च़्येर
गुरू म्याने पादन लगहय पअरय पअरि

26. देवी लीला

अरि ज़ुव दरि कोठय घर वातनाविज़्यम
    कॉसि प्यठ मअज्य त्राविज़्य्म न ज़ॉह

अछि गाश कोठ पनुन अन्द वातनाविज़्य ....

मंगुन गछ़ न कॉसि नय अथ दारूण

पर नय मअज्य पाविज़्य्म न जाँहू

ढ़य्क ढ़ौम्ब ह्रथ मअज्य म्येति फोलराविज़्यम ....

अन्त समयस यलि प्राणं लगनंम दर

सोनमौख मअज्य पान रूज़िज़्य्म

ज़्य्व सूति ॐ शिव शिव परनविज़्य्म ....

पोष मस्तान विनती छय कुनि

भक्ति पनीन प्रावनाविज़्य्म

यिन गछ़न निश मअज्य म्येति मोकलीवज्यम ....

27. सतगुरू देवी लीला

मरिथ नो दुबार योर गछ़ न युन, सन्ताप अमृत गछ़ व चोन

मंगुन नो गछ़ि न कॉसिं केंह तिप्योन अरि जुवत दरि कोठंय

सान म्ये निम

बोजुम दयालु सत्गुरो प्रसन्न वीनथ वरदानम्येदिम

शोद्ध बोद्ध तदृढ़ विश्वास पूर

समयुक त भक्ति ज्ञान म्ये दिम

गरि पत गति बडराव म्ये भाव

विज़ि विज़ि म्ये पनुनय साय थाव

सअरि शब्द वनिम्ये बोज़नाव

दर्शुन दवान दवान म्ये दिम

यकदम च़लिह्येम सअरय कसर

पापन पोन्यन प्यठ क्या हसर

बस छम म्ये चअन्य अक नज़र

सोय कोरूम त सत्गुरू दान म्ये दिम

सत्गुरू दया सायस छि यस

परवाय भक्तिस क्या छु तस

बस छम म्ये चअन्य यछ़ त पछ़

सोय करूम त सत्गुरू दान म्ये दिम

माता दया सायस छि यस

परवाय भक्तिस क्या छु तस

वस छम म्ये चअनी चछ़ त पछ़

सोय कर म्ये मअज्य दान म्ये दिमः

ॐ शर्वाय नमः ॐ भवाय नमः ॐ रूद्राय नमः

ॐ उग्राय नमः ॐ भीमाय नमः ॐ पशुपतये नमः

ॐ महादेवाय नमः ॐ इशानाये नमः ॐ शान्ति शान्ति शान्ति

28. क्षमा प्रार्थना

हे परमेश्वरी, मुझसे रात दिन हज़ारों गुनाह होते हैं। यह मेरा अरदास है, ऐसा समझकर मेरे उन गुनाहों को आप दया करके क्षमा करना।

परमेश्वरी, मैं आवाहन नहीं जानता, विसर्जन करना भी नहीं जानता और पूजा करने का ढंग भी नहीं जानता।

क्षमा करो देवी सुरेश्वरी मैंने जो मन्त्रहीन, क्रियाहीन और विधिहीन पूजा किया है वह सब आपकी कृपा से पूर्ण हो, सैकड़ों अपराध करके भी जो तुम्हारी शरण में जगदम्बे कहकर पुकारता है उसे वह गति प्राप्त होती है जो ब्रह्मा वगैरह देवताओं को भी मुयसर नहीं है।

जगतअम्बे मैं अपराधी हूँ मगर तुम्हारी शरण में आया हूँ इस वक्त दया का पात्र हूँ, तुम जैसा चाहो करो।

देवी परमेश्वरी अज्ञान से, भूल से या बुद्धि भ्रष्ट होने के नाते मैंने जो कमी व पेशी की है वह सब माफ करो देवी और

मुझ पर प्रसन्न हो जाओ।

सर्वव्यापक परमेश्वरी, जगदअम्बे, मातेश्वरी तुम प्रेम से मेरी यह पूजा कबूल करो और मुझ पर खुश रहो।

देवी सर्वेश्वरी पौशीदा से भी पौशीदा चीज़ की हिफाज़त करने वाली हो, मेरे निवेदन किए हुए जप को ग्रहण करो। तुम्हारी कृपा से मुझे सिद्धि हासिल होगी।

29. क्षमा आरती

ब़ मअज्य केंह नय ज़ानय पूज़ चअनी
क्षमा कर्ज़्यम योदय मन्त्र मशम काँह
दया कर्य्ज़्यम म्ये माँ च्यें रोस्त छुम काँह
म्ये कर्य्ज़्यम कामना सिद्ध की भवानी
क्षमा पापन म्ये करतय मअज्य भवानी
म्ये कर्य्ज़्यम कामना सिद्ध ही सदाशिव
कढुम हर करम मन्ज़ नेरह ब वुनि राह
म्ये कर्य्ज़्यम कामनासिद्ध ही भवानी
ज़न्म सोफल म्ये करतय मअज्य भवानी
दया धर्मय विच़ारय सूत्य वारय
सहा रोज़तम त बोजतम ज़ार पारय
दया धर्मय विच़ारय सूत्य वारय
सहा रोज़तम ति दितम् भव सरम्ये तारयं
मंगुन छुमन तगान बोजुन तगान छुय
लोकुट शुर यत पअठय माज्यदोद मंगान छुय
मये छम विनती कुन्य वोज़ ही भवानी
ब रटहय हृदयस मन्ज़ पाद चअनी
व करहय लोल अशि सूत्यन यिमन श्रान
छ्लय वोथरय त वथरावय पनीन प्राण

करान रोज़हय व न्यथ सुमरण यि चान्य
स्वरान रोज़हय दोहय शिव शिव भवानी
यिहय विनती म्ये माता करतम मन्जूर
दितम सौख पूर करतम दौख दूर

30. "शिवाय नमः ॐ नमः शिवाय"

आधार ज़गतुक कुनुय छु मन्त्र
शिवाय नमों ॐ नमः शिवाय
त्रिपंच नयनो ही आदि दीवो
जटा मुकुट छुय गण्डिथच़्ये दीवो
चन्द्र अर्द्ध शेखर त्रिलोचनाय .... ।।
च़्ये नीलकण्ठो जटन छय गंगा
च़ मोक्षदायक गोसञ्य नंगा
अलख अगोचर छुपयन गुफाये .... ।।
विहिथ छय गौरी च़्ये सूत्य नालय
वलिथ छुय सर्पन हुन्दुथ दुशालै
सहस्त्र सिर्पि तीज़ च़्ये मन्ज़ जटाये .... ।।
अथस च़्ये डाबर च़ वीन वायान
कपाल माल त्रिशूल धारान
भक्तयन अभय छुख दिवान यछ़ाये .... ।।
रटिथ च़ अंकुश खडग धारिथ
धनुर धनन मन्ज़ पिनाकच़ारिथ
वथदनि व दण्डवत करय हा माये .... ।।
भवाय दीवो शर्वाय दीवो
भस्माय दीवो सुरान च़्यें ज़ीवो
च़्य जीव पूजान छिय भावनाये .... ।।

संसार सोदरस म्ये तार तारूम
अमर बनावुम शिव मार्ग हावुम
वोलुस कुकर्मव कु वासनाये .... ।।
अनाथ वन्धु दयायि सागर
संसार की दुःख म्य यिम् छि तिम चॖठ
ज़गतंस दया कर चॖ हृथ ओमाये
शिवाय नमः ॐ नमः शिवाय

31. शंकर लीला

गट कास्तम वास्तम चॖवापारी
ही सदाशिव शंकर त्रिशूलधारी
आसनय पुण्य सूत्य ल्येलि न ओसुम परवाय
पापन हुनदि भरि छम गोबेमचॖ काय
येमि बापत छम अन्द्रि बेकरारी .... (1)
कॖनन गोम कुनुय योर बॖ आसय वरसतल
तुजिम दोर कुनिय योर ब आसय बरस तल
रछ़ा अक म्ये कुन रोज़ कन दॖारि दारि .... (2)
बे कोताह वनय क्या वुन्युक्ताम म्ये गुज़रोयम
करख त्राहि त्राहि दंदस तल छ़नख ज्यव
म्ये प्येठ प्येठ वोज्य बोज़तम ज़ार्य ज़ारी .... (3)
यन आसु ज़नमस तन गोस यति बन्द
गछ़ान छुस यिवान छुस लवान छुस न काहति अन्द
मोकलन पाय ज़न्म गयि नेरनच न वारी .... (4)
कया गछ़ी कम शंकर दास म्य गंज़राव
येमिं भवसर तार म्याज्य फटमचॖ यि नाव
तार हौंज़ बनिथ कास्तम दुश्वारी .... (5)
गुलि गंडिथ छुसय मंगान शंकर कुनुय वर

सनमौख आमतिस आरतिस दयाकर
भवसरस तार म्ये ह्यतम ज़िम्मवारी .... (6)
भाव नयेर नेरय यमि दरबारी
पाप शाप कास्तम बेयि लाचारी .... (7)
सोर्य सोर्य म्ये शकर अर्धम वछम्ये थर यमि कठिन भक्सर किथ अपोरतर
छुस गलान हनि हनि यि ब्यच़ायं व्यच़ार्य ही सदाशिव शिवशंकर रत्रिशूलधारी

32. श्री सतगुरू महाराज के अर्पण

दिस प्रतिक्षण चक्रेश्वरसय सत्गुरूसय कर नमस्कार
दिव तार वनि भवसरसय सत्गुरूसय कर नमस्कार
गौढ़ गोसस हॅरि प्येठ ब़रसय
ज़ार वोनमस अनुमस आर
सुय छु मोहरम म्यें प्रथ कुनि ज़रसय
सत्गुरूसय कर नमस्कार
नादीदन वीद क्या परसय
खय कास्यम अज़ सरकार
आह म्येन लगि वर मावरसय
सत्गुरूसय कर नमस्कार
सिद्ध लक्ष्मी छि दोयमिस घरसय
डेडि प्येठ छिस हलमत वीर
खीर खण्ड के थाल हस बरसय
सत्गुरूसय कर नमस्कार
अम्बरि कोलनिस तस मन्दरसय
नाव लेखान छि लेखन वाल्य
ढौख दिथ प्येठ मौखसरसय

सत्गुरूसय कर नमस्कार
वामदीवस वामीश्वररसय
कामदीवन करमच़ छि कथ
भय निश मोकलावुम भवसररसय
सत्गुरूसय कर नमस्कार
आश आसम गोस आह सरसय
पौखरिबल छुय अमृत कुण्ड
माशम़ारिथ वाश कोडम्ये परसय
सत्गुरूसय कर नमस्कार
घरनोवुमय म्येति मन्ज़ घरसय
परनोवुम सूं हँ सू
दय्व तार बनि भवसररसय
सत्गुरूसय कर नमस्कार
कया कर्म अस्य महिषासुरस्य
मअज्य हन्दि अथ हारिण प्राण
प्रोवुन स्वर्ग क्षण मात्रसय
सत्गुरूसय कर नमस्कार
च़क्रेश्वर सथ अथ दीवी द्वाररसय
कमि हेचि करिथ भटिका दिथ
नोक्त त्राविथ व़ति मोकसररसय
सत्गुरूसय कर नमस्कार
वीर महावीर लगिमति छि दरसय
गीर करिमति छि लोलन चआनी
च़ठ माया काया घरसय
सत्गुरूसय कर नमस्कार
क़ोह मारिथ प्येठ सीता सरस्य
ओल यूरून त वोपदेव व्योल

पछ़ नय छय प्रछ़ हरि हरसय
सत्गुरूसय कर नमस्कार
राज कुस करि यथ राज़ घरसय
ताज दिथ छख बाज ह्य्वान
क्रूध चानिच थर छि शंकरसय
सत्गुरूसय कर नमस्कार
दीह त्ऱाविथ काया घरसय
वीह करिनय भोवमय हाल
ज़ात ग़ालिथ वति हर हरसय
सत्गुरूसय कर नमस्कार
शामन प्रछ़नय दिगम्बरसय
दामान चोन छु मन्ज़ मोछि मन्ज़
सु छि बखशान हाल परसय
सत्गुरूसय कर नमस्कार।

33. शिव लालसा

यीना सु शिवनाथ हाल्य दिल भावोस
लगहोस नावस बोज़िना जार
गौफ बल दारि ब़र बन्द करिथ थावोस
कैलास कोह प्यठ लागोस न्चाय
धून्या ज़ालिथ लोल बअगरावोस
लगहोस नावस बोज़िना ज़ार
कलुशः वहारिथ वुन्यति आज़मावोस
आस्यमा कर्मस लीखित केंह
स्वाहकार त आहुति चालू थावोस
लगहस नावस बोज़िना ज़ार
आदि दीवस अथ्य गौढ़ वननावोस

10. जो मनुष्य सिर में एक रूद्राक्ष धारण करके सिर से स्नान करता है उसको गंगा के स्नान का फल मिलता है।

11. जो मनुष्य नित रूद्राक्ष पूजता है उसे राजा के समान धन मिलता है।

43. अंगन्यास

गायत्री मन्त्र का न्यास करने के लिये दो दर्भ के तिनके दोनों अनामिका अंगुलियों में पीछे की ओर मोड़कर रखिये, फिर दोनों हाथों की अंगुलियों से नाभि को स्पर्श करते हुए पढ़ें :–

ॐ "अ" नाभौ "ड" ह्यादि (हृदय को) "म" शिरसि (सिर को) "ॐ भूः" पादयोः (पावों को) "ॐ भुवः" ह्यदि (हृदय को) "ॐ स्वः" शिरसि (सिर को) "ॐ भूः" अंगुष्ठाभ्याँ नमः (अंगूठों को) "ॐ भुवः" तर्जनीभ्याँ नमः (तर्जनी को) "ॐ स्वः" मध्यमाभ्यां नमः (मध्यमा को) "ॐ महः" अनामिकाभ्याँ नमः (अनामिका को) "ॐ जनः" कनिष्ठिकाभ्यां नमः (कनिष्ठा को) "ॐ तपः सत्यं" करतल कर पृष्ठाभ्यां नमः (दोनों हथेलियों को) "ॐ भूः" पादयोः (दोनों पांवो को) "ॐ भुवः जान्वोः" (दोनों घुटनों को) "ॐ स्वः गुह्यो" (गुह्य स्थान को) "ॐ महः नाभौ" (नाभि को) ॐ जनः हृदिः (हृदय को) "ॐ तपः कण्ठें" (कण्ठ को) "ॐ सत्यं शिरसि" (सिर को) "ॐ भूः हृदयाय नमः (हृदय को) ॐ भुवः शिरसि स्वाहः (सिर को) ॐ स्वः शिखायै वषट (चोटी को) ॐ महः कवचाय हुम (वस्त्रों को) ॐ जनः नेत्राभ्यां वौषट (नेत्रों को) ॐ तपः सत्यम्–अस्त्राय फट् (चुटकी मारकर) आगे भी ऊपर की भांति अंगुष्ट आदि को स्पर्श करते हुए पढ़ें :–

"ॐ तत सीवतुर" अंगुष्ठाभ्यां नमः "वरेण्यं" तरजनीभ्यां नमः "भर्गों देवस्य" मध्यमाभ्यां नमः "धीमहि" अनामिकाभ्यां नमः "धियो यो नः" कनिष्ठकाभ्याँ नमः "प्रचोदयात्" करतल कर पृष्ठाभ्यां

नमः "ॐ तत पादयोः" "सवितुर" "जान्वोः" "वरेण्यं" कट्याम् "भर्गो" नामौ "देवस्य" "हृदये" "धीमहि" कण्ठे, "धियो" नासिकायां, "यः" चक्षुषोः "नः" ललाटे, "प्रचोदयात्" शिरसि, ॐ तत सवितुर् हृदयाय नमः "वरेण्यं" शिरसे स्वाहा, "भर्गो देवस्य" शिखयै वषट्, "धीमहि" कवचाय हुँ धियो योनः नेत्राभ्यां वौषट प्रचोदयात् अस्त्राय फट् "ॐ आपः" स्तनयोः (स्तनों को) नेत्रयोः "रसो मुखे" अमृतं ललाटे (माथे को) ब्रह्म–भूर भुवः स्वरोम् (शिरसि)

44. मृत्युंजय मन्त्र

त्रयंबकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनं
उर्वारुकमिव वन्धनात मृत्येभ्रिक्षीम माम्रुतम्ः

न	म	शि	वा	य
म	मि	व	य	न
शि	व	य	न	म
वा	य	न	य	मि
या	न	म	शि	व

सिद्धिदाता म्ये छुम सुय
तमिस यच्छ़मुत पछ़ कोन थावोस
लगहस नावस बोज़िना ज़ार
ॐ शब्द सूत्यन् ग्रज़ तुलनावोस
घण्टायि त शंख वायनावोस सूत्य
धूप दीप कनि प्राण आलनावोस
लगहस नावस बोज़िना ज़ार
नाना भूज़न त्यार करनावोस
हेरथ बअ़श दोह करहस साल
भगं धतुर त सब्ज़ी दाल रन–नावोस
लगहस नावस बोज़िना ज़ार
बाद ओसुन कोरमुत याद सुय पावोस
साध क्याज़ि लोगमुत छुन
प्रेमकि पोष च़्अर्य च़्अर्य ब थावोस
लगहस नावस बोज़िना ज़ार
गौड़ अषि वाणि सूत्य दिवनावस
ज़प मलि सूत्य शशि कल वुज़नावोस
फल ओस खअर मंज़ छल ओन खारोस
लगहस नावस बोज़िना ज़ार
'च्रमन' ओस लोगमुत अथ चिकचावस
यारस कर म्येलि यार
नाल फरियाद ब्रोंठकनि थावोस
लगहस नावस बोज़िना ज़ार।।

34. शारिका लीला

वुन्यकय्नकि समयण अस्य पथर छि त्रावयमति
पाविमत्य छिन अस्य हेयर पेठि बोन

योहय हाल वनन्य अस्य माज्य शारिकाये
अस्य आय करीन योर पोष पूज़ा
शारिका पीठस मन्ज़ शारिंकाये
अस्य आय करनि योर पोष पूज़ा
दैय्व अस्य ढ़य्क बऽढ़ मअज्य करि सोन उपाय
अस्य आय कररि योर पोष पूज़ा
च्य़ छख अन्ज़रान त गंज़रान न्याय
च्य छख बख्शान च़्य दिवान तार
च़्य छख नखि डखि चोनुय छु सायय .... (1)
शुभान क्या छय 18 भुज़ाये
प्रथ भुज़ाय प्यठ छुय सास आलम्
कास अस्य अन्धकार कर सोन उपाय
च़ोर वीद छि ग्यवान चअनी च़ाय
पाँच प्राण ह्रथ छुसय च़्ये अर्पन
राम नाम लेखान प्येठ सीताये .... (3)
राज चोनुय छु प्येठ प्रज़ाये
दाज म्योन कर वाति चोन दरबार
लरज़ चानि वलिमति छि बुर्ज़कायायै .... (4)
सास सिर्यि तीज़ छुय च़्ये सूक्ष्मनाये
नौ नदान डोलान छिय पादन तल
वोत कुस अज़तान्य चानि मायाये .... (5)
भक्तयन दूर कर कुल आपदाये
आपदा कासुख त सम्पदा दिख
सम्पूर्ण करि सान्य मनोकामनाये .... (6)

35. महामन्त्र

आधीनाम्–अगदं दिव्यं, व्याधीनां मूलकृन्तनम्
उपद्रवाणां दलनं महादेवम्–उपास्महे

36. पाद-लीला

मअज्य पादन् तल बे आसय करत मंजूर नाद म्योन्
गछ़ि म्ये रोजन्य शेरसय प्येठ ता अरब यिम् पाद चअन्य
यिम् छि सअरी कामना ह्यथ माज्य निश आमित य़ोर
छख च़ रोशाऩ मअज यूता, छुस बे त्यूता न असान्
गम म्ये च़लहन वार वन्तम कम छि आ़ख़र साध चान्य ....(1)
9 त 10 गंज़रावनस प्येठ योदवय कोरथस त्यार
ग्रन्द कमि अकि ह्यच करिथ क्म्य कौर माता अथ शुमार
टअठय यिम ति छि तिम छि वोज़ान वाद सँवाद चअनि ....(2)
चोन हूय कस तोग़ तगन वाल्येन तगनगी प्ये पत्थर
चोन रोशन नाव माता छुय च़्यें रोज़ान सर ब सर
म्यानि ज़न गयि ब़र फोलनय रूज़ितन आबाद चअन्य ....(3)
अन्त रोस्त रोज़य त व्यय शभ दर कायनात करि फना
मनुष्य किनि ओसुस मनुष्य च़्येति बनोवथस मनुष्य ज़ात
क्या च़्ये लायक बनि न माता अस न फरियाद म्येन ....(4)
क्या म्ये चोन सरमाय तिय वे अन्नहय़ ढ़ालि च्यें
संग दिल लोगुत च़्ये कूताह रंग च़्ये डोलतु बअलि म्ये
भक्ति कोताह ख्रौश यलि ग्यवान इरशाद चअन्य।।

37. शारिका ज्ञाल लीला

ज़गतच च़ माता शारिका यमि ज़ाल मन्ज़ म्ये मोकलावतम (i)
प्रारान म्ये यच़ काल गोम ब़र छुस गोमुत फोलरावतम
कत्याह म्ये वनिमय वीलज़ार वञ्य वञ्य च़्ये माता ओय न आर
मटि मा च़्यें खसनय म्येनिबार सोम्बिरित मतय छकरावतम (i)

कमर्च वदल ज़नमच यि हान विज़ि विज़ि करान छम नीमजान
च़रणन करय अर्पणयि प्राण यिम हलि अक्षर नाहवनातम (i)
सऩ छुम गोमुत अन्दिर दिलस माता हलम्ये करतम मुश्किलस
तै करनावतम मंज़िलस अंज़िरिथ बे खोद गन्ज़रावतम (i)
कामन् त क्रूधन बौद्ध च़टम् लूभन त मूहन च्यथ रट्म
मोह छ़टि गटि मन्ज़ मोठ वट्म येमि नार मन्ज़ म्ये मोकलावतम
गोश दिथ च़्ये न्येरी क्या मुद्दा ब़र तल गदा लायान सदा
वननस म्ये मा छुम काँह अदा युथ शीम त्युथ में ह्वेचनावतम(i)
ताहयुन दोधुम मालिन्य गरे पानस पन्ज्य रूदिम ठरे
दासस छु लगुमुत दोह दरे ब्रोंठकनि छुसय प्रज़नातम
प्राराण म्ये वज्य यच कालगोम ब़र छुस गोमुत फोलरावतम

38. गुरू लीला आराधना

पूरि दितम़ बब़ा पूरय आराधना चअनी करय
दुर्यर च्यें निश न सज़रय आराधना चअनी करय
प्रव चानि तीज़च येलि प्यवान्
मन छुम द्रमान जुव छुम शमान
छुम मशान शुरि त वअच़ त टोठ घरय .... (iii)
ज़प तप बेय व्याच़ारूक य ज्ञान
यूगच कुनि मा छय म्ये ज़ान
अनज़ान पोषु ह्यू मा मरय .... (iii)
मन्दछान मन्दछान छुसय यिवान
पापन पौज्यन साम ह्वान
आरतिस कास स आहच़रय .... (iii)
शिव रूप सहायतस नाव छु चोन
मनुष्य रूप छुम प्रेमभावचोन
गुरू रूप तार दिम भवसरय .... (iii)

म्ये हिश बूज़ि कूता ह ज्ञान
कमि रंग पूज़थ छुस बे घअर जान
लच्छ नावे कासुम स मर मरय .... (iii)
अथ छोन आमुत बे दास छुसय
कर क्या वनि मोहताज छुसय
चन्द छनि सौदा क्या करय .... (iii)

39. सत्गुरू आराधना

अज्ञान ग़टि मन्ज़ गाश हावान छुक रम्बोनय
सत्गुरू म्याने सिर्यि प्रकाश छुख आसवोनय
छुक दीन दयाल दीनन छुक दया करान
त्वय व्योन व्योन नाव छिय च़्ये सोरान
लछ नोव असिथ छुक च़ केवल कुऩय ज़ानेय........... (ii)
दया सागर भक्तयन छुक दया दया वरान
युस युथ वुछिय तस तिथ छुक पानय वुछान
कास्त म्ये अन्धकार दैय्य च़लिह्म क्रेछर प्रोनुय .... (ii)
चानि तोताई सूत्य यूग्यिन शौभ दर्शुन बनान
चानि तोताय सूत्य साधन सन्तन रति फल बनान
मूर्ख बे अज्ञानी ज़ान क्या छु महिंमा चोनुय .... (ii)
गुरू रूप ब्रह्मा गुरू रूप विष्णु महेश्वरं
सदाशिव छुख गुरू रूप्रय म्योन परमेश्वर
त्रिगुण स्वरू... निर्मल केवल कुनुय .... (ii)
मंगु मय न राज ताज नय मंगान धन ध्यार त दौलत
मंगु मय न संसार नय मंगान भेय कॉह ज़ियाफ़त
मरन् गरि नाव चोन गोछ़ म्ये च़्यत्स प्योनय .... (ii)
अज़र अमर निर्गुण छुख निर्मल स्वरूपी
ॐकार रूपी सर्वशक्तिमान छुख ब्रह्मरूपी

मायायि निश चानि येति रूज़िथ छाह काँह ब्योनुय .... (ii)

हर्ता त कर्ता छुख च़ पानय च्ये कुन छि नैमान

केह मुर दअरिथ केंह दोछ़ि दोछ़ि अहि मंगान

ह्यच़र लद छुस छुम न तंगान केंन्ह मंगनुय .... (ii)

हि अविनाश पअद करिथ़ छुख नाश करान

लीलाधरो रंग रंग छुख लीला करान

मस्तान क्रेशन युन त गछुन छुय न्यथनोनुय .... (ii)

स्वामी 'चमनलाल' पूज़ान छु पनीनस ब़बस

जुव जान वन्दहस परमयूगी अमिस नन्दब़ब़स

अ़हि मंगस हेय्थ समिति हुन्द कबील क्रोनुय .... (ii)

40. नन्द बब अर्पण

नुनरीक नन्दलाल ज़िन्दह द्राख़ रिन्दय

सैयरी कोन्दि हन्दय पअठय पोयुत पान

यम़अ सैयरी यथ यथ धरस लजय

गयि तिम पौख्त यौन्द अ़सि खाम्

दिल फोलिह्येम चानि दर्शन नन्दलालय

अस्य क़र अनुग्रह सोन वल सालय

तप ऋषि ओसुख द्राख परम् यूगी

द्राख कर्म यूगी वरण द्राख़ जूगी

कर्म ल़ोन बूगनस लोग़ न कांह ति चारय ....

बुथ चोन प्रज़लान ज़न माहि आफताब

कद चोन वऩ क्या ज़न सर्वे शमशाद

हलि श्राख़ नअलि योनेय्न हंन्ज़ मालय ....

सूठ बूठ लगि़थ कमरबन्द चअरिथ

साहब टूपि शेरस ढ़य्क मुच़राविथ

ढ़ंढ ह्यथु इस्ताद ज़न पहरदार ....

चानि बंर तल न स द्राव काह खअल्य
यस युथ शूभि तस बंरथ तिछ जूली
केंह द्राय सेद्धि बुथि केंछ़न मंलालय ....
येति छन ज़ात पात न छु हिन्द मुसलमान
नज़राह करिथ छुख सारिनय यक्सान
लोंल ब़गरूथ त होवुथ भ़ायचारय ....
पज़राह च़ ओसुख पोज़ वरतोवुथ
पंज़ि वति द्राख पान पज़ वथ हाव़थ
ॐ समितिं करान ज़ार पारय ....

41. माता आराधना

मअज्य भ़वान्य सहस् प्येठ खसिथ
वनतम च़ कोतय दोराणी
ठहराव कदम अक़ साथा
हाल म्योन गछ़त बोज़ोनी
य़न प्येठ च़्यनिश मअज्य छ़यन बे गोस
तन वोतुम च़्ये छांडानी
दाधि चानि च़टिह्य्मय कोह त बाल
च़्यें पथ ब गोस वनि देवानी ....
ओसुस वुछान च्याने वतय
लूसुस च़्ये पथ बे छ़ाऱाणी
छ़ाय चअन्य पेयम न बुथि म्यें मअज्य
ओसुस तथ बे प्राराणी
आशायि हन्ज़ गरि तय पहर
ओसुस बे गन्ज़ेरानी
कऱ वनि म्ये मयुल चोन, कर च़ मौख
हावख म्ये बनि मेहरवानी ....

चानि विरह कि नारूक में ज़्यंत
जिगरस म्यें ओसुम वुहानी
कलि चानि सोरि स्वर्य कोर म्ये सूर
अन्द्रिय गयम् सो ज़ालानी ....
यन द्रास च़्ये छाँडनि पथ त ब्रोंठ
छ़ाय चानि बे गोस गथ दिवानी
सनि कुस च़्ये रोस्त मअज क्या म्ये गोम
क्या ओसुम म्ये गुदरानी ....
चानि विरह कुय मअज्य अन्दिर भार
ओसुस ब प्यतरानी
दुश्वार गोम दूर्यर म्ये चोन
मअज्य ओसुस न च़ालानी ....
लोलि मन्ज़ मअज्य पाद ह्रथ बे चअन्य
सोज़ ओसुस बे वायोनी
गांगलि करिथ तथ सूत्य बे पान
आसुस बे दिन कटावानी
विरहकि दौख दरयाव ग्यविथ
लग्य लग्य म्ये तुजि परेशानी
विरह आवलन्य चअीन रोटस बे तल
आसुस न तति वोतलअनी ....
चानि बिरह व़दि वदि म्ये ल़ज्य
ज़न खून ओसुस हारानी
चानि डेश़न बापत बे मअज्य
पान ओसुस बे मारअनी ....
लोगुथ स्यठा संगदिल च़्ये मअज्य
अमि मन्ज़ क्या च़्ये नेऱानी

क्या यि छः माज्य हुन्द स्वभाव
छा दूर शुरिस त्रावाणी ....
चानि ख्याल मअजय चोन स्वरूप
ओसुस बे ठीक रावाणी
त़थ्य कुन म्ये वुछि वुछि सन्ज़ करिम
अज़ तान्य बे गोस द़िन कड़ोनी ....
वोज्य गोम योद मिलच़ार च़्ये सूत्य
अड़ि खौर च़ क्याज़ि ठहरअनी
शोक सान बे आसय ब्रोंठ कुन
दक दिथ च़ कोतुय छख चलानी ....
छुस वनान च़्ये मअज्य गुदरून पनुन
बूज़िथ च़ डाल कोत दिवानी
दक् ज़द छुसय प्योमुत पथर
फ्रक होत च़्ये पत बे लारानी ....
समया स्यठा गोम मअज्य च़्ये पथ
प़कि प़कि बे गोस वोज्य थकानी
वोज्य च़्ये रोस्त अख़क्षण यमि, अपोर
ठहरिथ छुसय न केंन्ह ह्वकानी ....
वोज्य मं गछ़ म्ये बालकस नज़ीर दर
आरूते च़्ये रोस्त छुस बनानी
बेकस त बेबस छुस बे मअज्य
च़्ये रोस्त छुसय बे तम्बलअनी ....
या रोज़ म्ये सूत्य सूत्य नत् म्ये निम्
तोत् तोत् योत् च़ फेरअनी
पादन तल म्ये रठ युथ च़्ये सूत्य
बति आस शोले मारअनी ....

अद चलि म्ये चानि विरहुक नार
शहजार गछिहेयम म्ये वातानी
चलिहेय्म दौख तं दअध्य दूर गछन
सर्व सौख़ बे रोज़ प्रावाणी ....
भौंवारि निथ च्ये दोहस भक्त दरबार ह्यथ शरण दिवानी
कास्तम दौख त दअध्य भय त गम़ सहायतस रोज़तम म्ये भवानी

42. रूद्राक्ष परिचय

यह एक मध्यम कद का वृक्ष होता है। जो हिमालय पर्वत की तलहटी, नेपाल और भूटान की ओर विशेष रूप से पैदा होता है। इसके फलों की माला बनाकर शिव भक्त और साधु-सन्त पहनते हैं। इसके पत्ते कुछ लघु और गोल होते हैं, इसके बीजों को ही रूद्राक्ष कहा जाता है।

शिव पुराण में इसकी उत्त्पत्ति की एक कथा आती है। एक समय भगवान शंकर ने सागर के उपकार के लिए दिव्य सहस्त्र वर्ष तप किया। जब उन्होंने दोनों नेत्र खोले तो अश्रु पृथ्वी पर गिर कर वृक्ष बन गये और शिवजी की कृपा से वह भक्तों को प्राप्त हुए और धीरे–धीरे यह वृक्ष अर्थात रूद्राक्ष हर देश में पैदा होने लगे।

रूद्राक्ष खट्टा, गर्म वायु को नष्ट करने वाला, कफनिवारक, सिर दर्द को नष्ट करने वाला, रुचि पैदा करने वाला तथा भूत बाधा और ग्रह बाधा को दूर करता है।

(1) जो रूद्राक्ष आँवले के समान हो, वह उत्तम, शुद्ध और मनोरथ पूर्ण करने वाला होता है।

(2) जो रूद्राक्ष दृढ़ चिकना और काँटे समान मोटा होता है, वह सर्व मनोरथ देने वाला व भक्त के सब पापों को नष्ट कर देता है।

(3) 1, 3, 5, 7, 9, 11, 13, 14 आदि मुखी रूद्राक्ष धारण करने से ऋद्धि, सिद्धी, धन और ऐश्वर्य की प्राप्ति होती है। वैसे सभी रूद्राक्ष लाभदायक होते हैं।

(4) जिस रूद्राक्ष का विधि विधान से पूजन किया गया हो वह अत्यंत उत्तम रूद्राक्ष गिना जाता है।

रूद्राक्ष के प्रकार

वैसे तो रूद्राक्ष के बारे में बहुत से प्रकारों का वर्णन मिलता है। लेकिन मुख्य रूप से रूद्राक्ष चौदह प्रकार के होते हैं। अर्थात 1 से 14 मुखों वाले रूद्राक्ष होते हैं। प्रत्येक मुख अपना एक अलग महत्व रखता है, इस हेतु इनके धारण करने का भी विधान उसी प्रकार से किया जाता है तो अधिक फल की प्राप्ति होती है। मन्त्र रूद्राक्ष धारण करने के लिए निम्नलिखित हैं :–

1 मुखी रूद्राक्ष :– ॐ एं हं औं ऐं ऊं
2 मुखी रूद्राक्ष :– ॐ श्रीं हीं पै व्री ॐ
3 मुखी रूद्राक्ष :– ॐ रॅ इँ हीं हँ ओं
4 मुखी रूद्राक्ष :– ॐ वां त्रां तां हों ईं
5 मुखी रूद्राक्ष :– ॐ हॉ आं क्षमयो स्वाहा
6 मुखी रूद्राक्ष :– ॐ हीं श्रीं क्लीं सौं ऐं
7 मुखी रूद्राक्ष :– हं ऋीं हं सौं
8 मुखी रूद्राक्ष :– ॐ हीं ग्रीं लं आंश्रीं
9 मुखी रूद्राक्ष :– ॐ हीं ग्रीं लं आं श्रीं
10 मुखी रूद्राक्ष :– ॐ श्रीं हीं क्ली व्रीं ओय
11 मुखी रूद्राक्ष :– ॐ रूँ मूं शं औ।
12 मुखी रूद्राक्ष :– ॐ हीं क्षीं घृणिः श्री
13 मुखी रूद्राक्ष :– ॐ इ पां आप ओं
14 मुखी रूद्राक्ष :– ॐ ओ ह स्फे ख़्व्क्र हस्त्रौं हसैक्रः

रूद्राक्ष धारण के नियम

1. सभी वर्ण रूद्राक्ष धारण कर सकते हैं। भेद केवल यह है कि दिव्य मन्त्र से करें और शूद्र बिना मन्त्र के।
2. धारण के समय प्रणाम करके ॐ नमः शिवाय का जप करना चाहिए तथा मस्तक पर भस्म लगाना चाहिए।
3. सोने अथवा चाँदी की तारों में पिरोकर इसकी माला धारन करनी चाहिए। लाल धागे में भी पिरोया जा सकता है।
4. पुरुष यज्ञोपवीत, हाथ कण्ठ अथवा उदर पर भी धारण कर सकते हैं।
5. जो मनुष्य जानबूझ कर बिना मन्त्र के रूद्राक्ष धारण करता है वह नरक का भागी होकर किसी भी स्थान पर सुख नहीं पाता है, पर जो अज्ञानी मनुष्य मन्त्र के बिना रूद्राक्ष धारण करता है उसको कोई पाप नहीं हैं।
6. रूद्राक्ष शंकर के प्रतिष्ठित लिंग से स्पर्श करके धारण करना चाहिए।
7. ग्रहण विपुद्रव, संग्राम, संक्राति, अपन, अमावस्या, पूर्णमासी आदि पर्वों पर तथा पुण्य दिवसों अथवा सोमवार रूद्राक्ष धारण किये रहना चाहिए। इससे समस्त पापों से छुटकारा तुरन्त मिलता है और विजय की प्राप्ति होती है।
8. शैव साधक को रूद्राक्ष का कड़ा धारण करना चाहिए। जिसमें रूद्राक्षों की संख्या विषम हो तथा प्रत्येक मनका सब ओर से सम दृढ़ हो।
9. शिव मन्त्र की पूजा करके सोने की अंगूठी में रूद्राक्ष लगाकर, दाहिने हाथ में धारण करने से मनोवांछित फल की प्राप्ति होती है।

संकलन व सहयोग
स्वामी चमनलाल जी

ॐ कार शोभा समिति
स्वामी नन्द बब आश्रम
सूर्यविहार, मुट्ठी, जम्मू–तवी